बेटीक अपमान
आ
छीनरदेवी

बेचन ठाकुर

ISBN : 978-93-80538-35-8

मूल्य: भा. रु. 50/-
पहिल संस्करण : 2010

श्रुति प्रकाशन रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११)२५८८९६५७
Website:http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at: Ajay Arts, Delhi-11...2
Typeset by: Sh. Umesh Mandal
Distributor : Pallavi Distributors, Ward no- 6, Nirmali (Supaul), मो.- 957245.4.5, 9931654742
Betik Apman aa Chhinardevi: Two Maithili Plays by Bechan Thakur

बेचन ठाकुर , चनौरागंज, मधुबनी, बिहार।

आमुख

१

छीनरदेवी

ऐ नाटकक मादें किछु कहबासँ पहिने ओ गप्प कही जे प्रायः-प्रायः अंतमे कहल जाइत छैक। श्रुति प्रकाशन एकटा बड़का काज ठानि लेने अछि- हीरा-मोती-माणिककँ चुनबाक। आ ऐ मे ई कतेक सफल भेल तकर निर्धारण भविष्य करत, वर्तमान नै कारण वर्तमान समयक नीति-निर्धारकक इमान शून्य स्तरपर पहुँचि गेल अछि। मुदा एहन-एहन समस्याक अछैतो हमर शुभकामना ऐ प्रकाशनक संग अछि आ विश्वास अछि जे जेना ई धारक दूरी पार केलक अछि तेनाहिते आब ई समुद्रक दूरी पार करत। आ संगहि-संग ऐ नाटककँ उपर अनबामे जनिकर कनेकबो योगदान छन्हि से अशेष धन्यवादक पात्र छथि।

जहिआ सनातन धर्ममे पुराण-उपनिषद् के आगमन भेल रहैक, तहिआ देवी-देवताक संख्या ३३ करोड़ रहैक। आजुक समयमे जखन कि पौराणिक समय बितला बहुत दिन भए गेल तखन देवी देवताक संख्या कतेक हएत ? हमरा बुझने ३३ करोड़सँ बेसिए। तथापि सुविधाक लेल एकरा यथावत् मानू। आ एतेक देवी-देवताक अछैतो छीनरदेवीक आविर्भाव किएक?

उत्तर हम नै देब कारण ई गप्प सभ जनैत छथि मुदा लोक ऐ उत्तरकँ नुका कऽ रखैत अछि। आ संभवतः छीनरदेवीक ऐ रूपकँ छिनरधत्त कहल जाइत छैक। ओना एकरा बादमे हम निरुपित करब। ओइसँ पहिने एकटा आरो महत्वपूर्ण प्रश्नपर चली। जँ अहाँ श्री बेचन ठाकुर कृत ऐ नाटककँ नीकसँ पढ़ब तँ ई बुझबामे कोनो भाँगठ नै रहत जे ऐ नाटकक मूल स्वर अंधविश्वासपर चोट करब छैक। आ जखने अहाँ ऐ निषकर्षपर पहुँचब, अहाँकँ तुरंते प्रो. हरिमोहन झा मोन पड़ि जेताह से उम्मेद अछि। आ जखने अहाँकँ प्रो. झा मोन पड़ताह तखने हमरा मोनमे ई प्रश्न उठत जे प्रो. झा जइ प्रबलतासँ अंधविश्वासपर कलम

चलेने छलाह तकरा बाबजूदो ६०-७० साल बाद बेचन जीकेँ ऐ पर कलम चलेबाक जरूरति किएक पड़लनि ? एकर दूटा कारण भऽ सकैत अछि पहिल जे प्रो. झाक प्रहारक बाबजूदो अंधविश्वास मेटाएल नै (हम ई नै कहि रहल छी जे ई प्रो. झाक हारि थिक कारण हरेक लेखकक एकटा सीमा होइत छैक) आ दोसर कारण भऽ सकैत अछि जे बेचन जीकेँ कोनो बिषए नै भेटल होइन्ह आ मजबूरीमे ओ ऐ पर कलम उठेने होथि। मुदा आइ बर्ख २०-११ मे जखन गामे-गाम घूमै छी आ ओकर आंतरिक स्थितिकेँ परखैत छी तँ दोसर कारण अपने-आप खत्म भऽ जाइत अछि। आइयो गाम आ अर्धशहरी इलाकामे एलोपैथीक संगे-संग भस्म-विभूति आ ब्रम्हथानक माटि उपचारमे लाएल जाइत अछि। आ एकरा संगे ईहो स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे प्रो. झाक बादो ई अंधविश्वास मरल नै। आ एहने समयमे हमरा लग ई प्रश्न बिकराल रूप धऽ आबि जाइत अछि जे प्रो. झाक बाद जे नाटककार भेलाह (चूँकि बेचन ठाकुर जीक विधा नाटक छन्हि तँए हम नाटकेक दृष्टिसँ गप्प करब) से एतेक दिन धरि की करैत छलाह ?

आब हम ऐ प्रश्न सबहक उत्तर ऐ ठाम नै लिखब। एकर कारण अछि जे हमरा सदासँ विश्वास रहल अछि जे साहित्यिक संदर्भमे वर्तमान समयक उत्तर जँ भविष्यमे प्राप्त हुअए तँ ओ बेसी सटीक आ सार्थक होइत छैक।अस्तु श्री बेचन ठाकुर जीसँ मैथिली मंचकेँ बड़ड आस छैक आ तइ आसकेँ पूरा करबाक तागति भगवान हुनका देथिन्ह तइ आसाक संग चली हम प्रेक्षक समूहमे।

कोनो नाटक पहिने लिखल जाइए आ तकर बाद ओ टाइप होइए वा सोझे टाइप कएल जाइए आ तकर बाद कखन छपैए, मंचनक बाद वा मंचनक पहिने; ऐ सभमे आब कोनो अन्तर नै रहलै। जॉर्ज बर्नार्ड सॉ शॉर्टहैण्डमे लिखै छलाह आ हुनकर स्टेनो ओकरा लौंगहैण्डमे टाइप करै छलीह। बिनु छपने *मैथिली धूर्तसमागम* मैथिलीक पहिल पोस्ट मॉडर्न अबसर्ड नाटक अछि। ई तर्क जे छपलाक पहिने मंचन भेलासँ बहुत रास कमी दूर भऽ जाइए, ऐ सन्दर्भमे मलयालम कथाकार बशीरक उदाहरण अछि जे सभ नव छपल संस्करणमे अपन कथामे नीक तत्व अनबाक दृष्टिसँ संशोधन करै छलाह, ई कथामे सम्भव तँ नाटकमे तँ आर सम्भव। तँ सिद्ध भेल जे लिखल जेबाक वा छपि गेलाक बादे

नाटकक मंचन हएत आ मंचनक बाद लिखल वा छपल दुनूमे सुधार सम्भव। बेचन ठाकुरजी रंगमंच निर्देशक सेहो छथि आ विगत २५ बर्खसँ अपन गाममे मैथिली रंगमंचकेँ जियेने छथि बिना कोनो संस्थागत (सरकारी वा गएर सरकारी) सहयोगक। हिनकर रंगमंचपर हिनकर दर्जनसँ बेसी नाटकक अतिरिक्त गजेन्द्र ठाकुर आ जगदीश प्रसाद मण्डलक नाटक, एकांकी आ बाल नाटकक मंचन सेहो भेल अछि।

२

बेटीक अपमान

हम व्यत्तिगत रुपेँ हरियाणाक प्रायः-प्रायः प्रत्येक कोणमे रहल-बसल छी आ तँए स्थानीय जनताक रुपमे हरियाणामे कत्तौ घुसि जाइत छी। एकर हानि हमरा जे भेल हुअए मुदा लाभ एतेक तँ जरुर भेल जे हम स्थानीय परेशानी बुझए लागल छिऐक। ओना हरियाणाक नाम सुनिते मोनमे समृद्धिक नजारा देखाए लगैत छैक। भरल-पुरल खेत सुझाए लगैत छैक। मुदा एहिठामक स्थानीय समस्या बहरिआ लोककेँ नै बुझल छैक। ऐठाम हरेक साल १००-१५० लड़काक बिआह दोसर राज्यक लड़कीसँ होइत छैक। जँ सोझ ढ़ंगे कही तँ हरियाणाक सेक्स रेशिओ (लिंगानुपात) असमान अछि। अर्थात १००० लड़कापर ८५०-९०० लड़की।

आब अहाँ सभ हमरा हूट करबाक सोचि रहल हएब। प्रस्तुत पोथी मैथिलीक अछि आ हम हरियाणाक गप्प कऽ रहल छी से अहाँ सभकेँ उन्टा लागि रहल हएत। मुदा ऐठाम हम ई कहए चाहब जे मात्र स्थान आ मनुख बदलि जाइत छैक, मनोवृति आ समस्या वएह रहैत छैक। आब हम अही समस्याकेँ मिथिलाक परिप्रेक्ष्यमे सोची। बेसी अंतर नै भेटत आ से ऐ द्वारे जे नेपालमे सेहो मिथिला छैक। आ भारतक मिथिला आ नेपालक मिथिला दुनूमे बिआह प्रचलित छैक। तथापि जँ भारतक हिसाबे सोची तँ बिहारमे १००० लड़कापर ९२१ लड़की छैक (ओना जँ २०११ क जनगणनाक प्रोविजनल रिपोर्ट देखब तँ संपूर्ण भारतमे १००० लड़कापर ९४० लड़की छैक)।

आ जँ ऐ समस्याक परिप्रेक्ष्यमे विकसित हरियाणा आ अविकसित मिथिलाकेँ देखी तँ कोनो बेसी अंतर नै बुझाएत। अर्थात ऐ समस्यासँ दुनू क्षेत्र ग्रसित अछि। मुदा ई आब बिचारए पड़त जे ई समस्या कहाँसँ निकलैत छैक? कोन मनोवृतिसँ ई समस्या परचालित होइत छैक ? आखिर ई कोन दृष्टिकोण छैक जइ तहत लोक बेटी नै चाहैत अछि आ ऐ लेल भ्रूण हत्या सन पाप करबासँ सेहो नै हिचकैत अछि ? मिथिलाक हिसाबे गप्प करी तँ दहेज प्रथाकेँ एकर जिम्मेदार ठहराओल जा सकैए मुदा हरियाणाक हिसाबें ई कारण ओतेक प्रभावी नै कारण हरियाणामे दहेज प्रथा नै कऽ बराबर छैक। तँए हम दहेजकेँ भ्रूण हत्याक एकटा कारण मानैत छी मुदा प्रमुख कारण नै। हमरा हिसाबे ऐ समस्याक प्रमुख कारण एखनो आधुनिक कालमे बेटाकेँ अनिवार्य मानब अछि। एकर समाजिक आ आर्थिक, दुनू पक्षमे बाँटए पड़त।

समस्या आ साहित्य दुनू एकै चीजक अलग-अलग नाम थिक। बिना समस्या कोनो साहित्य नै भऽ सकैत छैक। आ अंततः साहित्ये कोनो समस्याक समाधान तकैत छैक। मुदा मैथिली साहित्य एकर अपवाद अछि। ऊपर हम देखिए चुकल छी जे कोना मिथिला भ्रूण हत्याक समस्यासँ ग्रसित अछि। तथापि ऐठामक साहित्यकार ऐपर कलम नै चलौलन्हि। घोर आशचर्यक बिषए। आशचर्यक बिषए ईहो जे एहने-एहने समस्यासँ कतिआएल साहित्यकारकेँ आलोचक आ मठाधीश सभ बढ़ाबा देलथि।

कोनो समाज कोनो समस्यासँ कतिआ कऽ बेसी दिन नै रहि सकैत अछि। एकर अनुभव हमरा श्री बेचन ठाकुर लिखित नाटक " बेटीक अपमान" पढ़लापर बुझाएल। आ संगहि-संग ईहो बुझाएल जे आब बेसी दिन मिथिला सूतल नै रहत आ ने बेटीकेँ खराप बुझल जाएत ।

-आशीष अनचिन्हार

अपन कथन

स्त्री-पुरूष दुनियाँक नीब छी। मुदा दहेजक कारणे समाजमे बेटीकेँ हेय दृष्टिसँ देखल जाइत छै। फलस्वरूप समाधान हेतु लोक अल्ट्रासाण्डक दुरूपयोग कऽ बेटीक वंश नाश करैक पाछु लागल अछि। जइसँ बेटा-बेटीक संख्यामे असंतुलन बनल जा रहल अछि। परिस्थिति एहेन बुझाइत छै जे दुनियाँमे खाली बेटेटा रहि जाएत। जइसँ गाड़ी केना चलत? अही संदर्भमे ***बेटीक अपमान*** नाटक लिखल गेल अछि।

समाजमे एहेन बहुतो घटना देखाइ पड़ैए जइमे अंध विश्वास नस-नसमे घोंसियाएल अछि। फलस्वरूप समाजमे एक-दोसरक प्रति घृणा आ इर्ष्या-द्वेष बढ़ैत अछि। हमरा जनतबे एकर मूल कारण अशिक्षा थिक। ओना शिक्षितो लोक कखनो-कखनो उल्लू सोझ करए लेल डाइन-धाइम दिस गुमराह करै छथि। ऐसँ समाजक प्रेम टूटै छै आ विकास रूकै छै। अही संदर्भमे लिखल गेल ***छीनरदेवी*** एकांकी अंधविश्वासक विरोध कऽ कर्त्तव्यनिष्ठताक प्रति मुखर करबाक एक चेष्टा थिक।

ऐ दुनू नाटकक अलाबा उगना, श्रवण कुमार, शति-सावित्री, तेतैर गाछमे आम कोना, बाप भेल पित्ती, अधिकार इत्यादिक लेखन संग मंचन २००२ई.सँ क्रमश: सभ साल, सरस्वती पूजाक अवसरपर करैत रहलौंहेँ। मंचन हमर छात्रा सभक माध्यमे अधिक भेल अछि। संगीता, शिल्पी, रम्भा, लक्ष्मी कुमारी आदिक भूमिका सराहनीय रहल। मनोज कुमार पौद्दार, हमर छात्र रहल छथि, हिनक मंच संचालनक कार्य आइ धरि हमरा भेटैत रहल अछि। हिनका सभ लेल ‘‘धन्यवाद’’क संग ‘‘आशीर्वाद’’ शब्दक उच्चारण बेर-बेर सहज बुझना जाइत अछि। ग्रामीण सबहक सहयोग, दर्शक रूपमे, सेहो भेटैत रहल अछि। जइसँ हम उत्साहित होइत रहलौं।

गणितसँ बहुत बेसी अभिरूचिक कारणे गणितसँ बी.एस.सी. केलौं। मुदा अपन मातृभाषाक संग सदिखन रहलौं। मैथिली नाटक लिखबाक जिज्ञासा भेल।

अनुभव नै छल, तैयो दुस्साहस केलौं। पेट चलैक जोगार ट्यूशन भऽ गेल। तँए हम घरेपर रहि, जएह-सएह अनुभव कऽ गामक समस्या आ ओकर निदानपर यथासंभव लिखबाक प्रयास केलौं। दर्शकक भीड़ आ चर्चा सफलताक परिचय देलक। मुदा ओइसँ संतोष नै भेल, जिज्ञासा बढ़ल। आब तँ सहजहि, किएक तँ हमरा सनक नेना नाटककारकेँ कियो प्रकाशक बिन्दुओ भरि जगह देताह, से सपनोमे नै सपनाएल रही। *"विदेह" प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिकाक* संपादक श्री गजेन्द्र ठाकुर आ हुनक सहयोगी श्री उमेश मण्डलकेँ हम हृदयसँ धन्यवाद दइ छियनि जे अपन मेहनति आ लगनसँ ऐ दुनू नाटककेँ धारावाहिक रूपेँ प्रकाशित केलनि जइसँ पोथी प्रकाशनक रास्ता सुगम भेल, सफल भेल।

आदरणीय कक्का श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, जनिक प्रत्येक शब्द हमरा लेल प्रेरणा रहल एवं हिनक व्यक्तित्व आदर्श। हम अपनाकेँ सौभाग्यशाली बुझैत छी जे हिनक सिनेह एवं आशीर्वाद हमरा भेटैत रहल अछि।

हमर सामान्य पढ़ाइक गुरू श्री शुभचन्द्र झा आ आओर संगीत पढ़ाइक गुरू श्री रामवृक्ष सिंहक अपार श्रद्धाक लेल हुनक हार्दिक आभारी छी। संगे-संग भाय मनोज कुमार मण्डलकेँ सेहो धन्यवाद दइ छियनि जे बेर-बेर हमरा गप-सप्पक माध्यमे उत्साहित करैत रहला अछि।

श्रुति प्रकाशन'क सहयोगक बिना ई पोथी अपनेक हाथमे नै रहैत, तइले श्रीमती नीतु कुमारी आ श्री नागेन्द्र कुमार झाजीक प्रति कृतज्ञ छी।

बेचन ठाकुर

१

बेटीक अपमान

पात्र-परिचय

पुरूष पात्र

दीपक चौधरी- एकटा साधारण पढ़ल-लिखल किसान

मोहन चौधरी- दीपक चौधीरीक बड़का बेटा

सोहन चाधरी- मझिला बेटा

गोपाल चौधरी- छोटका बेटा

प्रदीप कुमार ठाकुर- एकटा वार्ड सदस्य (दीपकक)

बलवीर चौधरी- पंचायत शिक्षक

हरिश्चन्द्र चौधरी- गरीब किसान

महेन्द्र पंडित- दीपक चौधरीक लंगोटिया संगी

सुरेश कामत- दीपक चौधरीक मामा

सोनू- दीपक चौधरीक ममियौत भाए

गंगाराम चौधरी- बलवीर चौधरीक छोट भाए

चन्देश्वर चौधरी- बलवीर चौधरीक पैघ भाय

हरेराम सिंह- बलवीर चौधरीक गामक एकटा वुजुर्ग

बौआ क्षा- एकटा अनपढ़ पुरहित

झामालाल महतो- दीपक चौधरीक पड़ोसी

सुरेन्द्र चौधरी- हरिश्चन्द्र चौधरीक भाए

प्रेमनाथ मेहता- एकटा प्रसिद्ध डाक्टर

टुनटुन- बलवीर चौधरीक भातीज

रमन कुमार- हरिश्चन्द्र चौधरी पंचायतक मुखिया

स्त्री पात्र

वीणा देवी- दीपक चौधरीक पत्नी

सुनीता देवी- बलवीर चौधरीक पत्नी

मंजू- बड़का बेटी (बलवीरक)

संजू- छोटकी बेटी (बलवीरक)

राधा देवी- हरिश्चन्द्र चौधरीक पत्नी

शालिनी- हरिश्चन्द्र चौधरीक बेटी

अंक पहिल-

पहिल दृश्य

(स्थान- दीपक चौधरीक आवास)

दीपक- मोहन माए, एगो गप कहु।

वीणा- कहु ने, एक्केटा किएक? जत्ते मोन तत्ते।

दीपक- एकटा बेटीक इच्छा होइ अछि। बेटा तँ भगवान तीनटा देलनि।

वीणा- आब इच्छे केने की भेटत? ई इच्छा जे पहिने होइताए तहन ने। पहिने बेटे लऽ जान जाइ छल। मोहनो बेरमे अहाँ कहलौं जे अल्ट्रासाउण्ड कराए लिअ। जदी बेटी हएत तँ ओकरा हटा देब।

दीपक- से तँ हम ठीके कहने रही। समए महगीक अछि। बेटीमे अग्गहसँ बिग्गह खरच अछि। आमदनी कोनो नै।

वीणा- अहाँ तँ सभ दिन आमदनीए बुझलिऐ की टक्के।

दीपक- मोहन माए, एकटा कहबी अछि- ‘‘टाका हि धर्मः, टाका हि कर्मः, हे टाका तू सर्वोपरि।’’

वीणा- धूर जाउ, अहाँ खाली फकरे सुनबैत रहैत छी। सुनु मोहन बाउ, दुनियाँमे टक्केटा सभ किछु नै अछि। ओकर सिंगारो ने हेबाक चाही। बेटा-बेटीए ने ऐ दुनियाँक सिंगार छी।

दीपक- लगैत अछि जे अहाँ हमर गुरू रही।

वीणा- हँ-हँ, कहब नीक तँ लागत दिक। आब हम कहि देब।

दीपक- हे हे चुप रहु, पोल नै खोलु ऐ भरल सभामे।

वीणा- नै यौ, हमरा आब बर्दास नै होएत। आब हम पोल खोलिए देब।

दीपक- हे हे मोहन माए, अहाँ बड़ड नीक लोक छी। हमरा बेज्जती जुनि करू। हे हे पएर पकड़ै छी।

वीणा- अहाँ तँ तेना खेखनियाँ करए लगलौं से कहि नै। खाइर आइ छोड़ि दैत छी।

दीपक- हे मोहन माए, आब गप-सप्प छोडु। हमरा जेबाक अछि जन ताकैले। देखै नै छिऐ जन सभकँ ठीकेदारीए चाही, हफकौरे चाही।

वीणा- बरनी आउ। हमरो भनसाक ओरीयान करबाक अछि।

दीपक- बेस, तहन हम जाइ छी।

(प्रस्थान)

पटाक्षेप

दोसर दृश्य

(स्थान- दीपक चौधरीक आवास। दीपक आ वीणामे किछु गप-सप्प होइत अछि।)

दीपक- मोहन माए, हम खेत जाइ छी। खेतमे हर बहै अछि आ दुटा जन सेहो अछि। कने जलखै जल्दीए लेने आएब।

वीणा- सुनू ने, तहन जाएब।

दीपक- बाजू की कहै छी?

वीणा- की कहब? जारैनक इन्जाम तँ साफे नै छै।

दीपक- याए जारैन कीन देने रही। ओ सभटा सधि गेल की?

वीणा- सधि नै गेल तँ की। अहाँकेँ बुझाए रहल अछि जे हम खाए लेलौं।

दीपक- हे मोहन माए, हमरा अबेर भऽ रहल अछि। कोनो जोगार कऽ जलखै जल्दी लेने आएब।

वीणा- कोन जोगार? कने बताए दिअ ने।

दीपक- कहैत तँ लाज होइ अछि। मुदा कहि दै छी। नै होएत तँ ऐ कलमसँ कने पत्ते खरैर आनब।

वीणा- नैहरमे खर्रा-पथिया चिन्हबो नै केलौं। मुदा सासुरमे अहाँ की नै करेलौं। आइँ यौ मोहन बाउ, आब वएह समए छैक जे जखैन तखैन खर्रा-पथिया लऽ कऽ जाउ आ पत्ता खरैर आनू।

दीपक- कोनो जोगार करब। हम जाए रहल छी। हरवाहा खेतमे की करैत हएत की नै।

वीणा- सुनि लिअ मोहन बाउ, हम जोगार करैत-करैत थाकि गेलौं। आब हमरासँ कोनो जोगार नै हएत। जोगार करैत-करैत हमरा दिस कियो ताकए नै चाहै अछि। सभटा प्रतिष्ठा माटिमे मिलि गेल।

दीपक- अहाँ बड़ड प्रतिष्ठित भऽ गेलौं की?

वीणा- हँ यौ तँ की। प्रतिष्ठा कोनो बजारमे बिकाइ अछि की? अपन व्यवहारसँ प्रतिष्ठा आबै अछि। अहाँकेँ की प्रतिष्ठा अछि?

दीपक- मोहन माए, अहाँ बड़ड चढ़ि-बढ़ि कऽ बाजि रहल छी आ हमरा प्रतिष्ठाकेँ उकटि रहल छी। आइ अहाँ खेत जलखै नै आनब, तहन बुझबै।

वीणा- यावत जारैनक जोगार नै कए देब, ताबत जलखै केर कोनो आशा नै। हम पत्ता खरैंले नै जाएब। अहाँकेँ जे करबाक हएत से करब। हम अहाँक पत्नी छी ने।

दीपक- से बुझि लेब। कोन बाँसक दाहा होइ छै।

वीणा- आइँ यौ मोहान बाउ, नै बाजी तँ पीचने जाउ। आइँ यौ, हमरा ऐ देहमे किछु अछि। ठाढ़े छी सएह बहुत। सौंसे देह उज्जर भऽ गेल अछि। एक्को रत्ती खून देहमे नै अछि। खाली जनमाबै ले होइ अछि। उपरेमे अल्हुआ फरै छै की? खाली बेटे चाही बेटे। चलु दरिभंगा। अल्ट्रासाउण्ड करए लिअ आ बेटीकेँ हटाए दियौ, बेटाकेँ रहऽ दियौ। सफैया कराबैत-कराबैत आ गोटी-दवाइ खाइत-खाइत हमर देह गलल जाए रहल अछि। आब हम नै बाँचब। बेटा लेल तारमतोर सफैया हमरा जान मारि देलक। देहसँ तारमतोर ओतेक-

ओतेक खून बहनाइ मामूली बात छै। समाजमे बेटी दुश्मन अछि की? हाइ नारायण बेटा-बेटा-बेटा।

(वीणा देवी दम तोड़ि दै छथि।)

दीपक- (माथ पीटैत) मोहन माए यै मोहन माए। आब हम केना रहबै यै मोहन माए। मोहना रौ मोहना। सोहना रौ सोहना। गोपला रौ गोपला। दौड़ै जाइ जो रौ बौआ सभ।

(मोहन, सोहन आ गोपालक प्रवेश। तीनू बेसुमार कनि रहल अछि)

तीनू- माए गै माए, हम सभ केना रहबै गै माए।

दीपक- बौआ सभ रौ बौआ सभ। आब अपना सभ केना रहबै रौ बौआ सभ। के खाइलए देतै रौ बौआ सभ। मोहन माए यै मोहन माए। हमरे खातिर अहाँ मरलौं यै मोहन माए।

(चारू बा-पूत कानैत-कनैत वीणाक देहपर मुरी रोपि दै अछि। पटाक्षेप भऽ जाइत अछि। अन्दरसँ राम-नाम सत्यक आवाज सुनाइ पड़ैत अछि।)

दृश्य- तेसर

(स्थान- दीपक चौधरीक आवास। वार्ड सदस्य प्रदीप कुमार ठाकुर दीपक चौधरीकेँ सान्त्वना दैत छथि।)

प्रदीप- दीपकबाबू, जूलूम भए गेल। घोर अनर्थ भेल। अहा! बेचारी बड नीक जनानी छलीह। एहेन जनानी गाममे कियो नै छलीह। एहेन परिश्रमी आ सहनशील जनानी कियो नै छलीह।

(दीपकक आखिमे नोर आबि जाइत अछि।)

दीपकबाबू, अहाँ कानि किएक रहल छी? जुनि कानू। आब कानला खिजलासँ कोन फेदा? होनी तँ हाथ धराए कऽ होइत अछि। जे हेबाक छल से भेल। जहन भगवानक यएह मर्जी छेलनि तहन कियो की कए सकैत अछि?

दीपक- सर, हमरा किछु फुराए नै रहल अछि। हम तँ किंकर्त्तव्य विमूढ़ छी। हरदम चिन्तित रहैत छी।

प्रदीप- चिन्ता-तिन्ता छोड़ू।

चिन्तासँ चतुराइ घटए। शोकसँ घटए शरीर।।

पापसँ लक्ष्मी घटए। कहलनि दास कबीर।।

आगू परबस्ती केना चलत, ओकर जोगारमे लागू।

दीपक- सर, हमरा तीनिटा बेटे अछि। एक्कोटा बेटी रहितए, तँ भनसो भात तँ करितए। घरमे कियो केनिहारि नै अछि। घरमे एगो केनिहारिकेँ बड आवश्यकता महसूस होइ अछि।

प्रदीप- मोन होय यऽ जे दोसर बियाह करी?

दीपक- सर, मोन तँ सोलहो आना होय यए मुदा करी की, से किछु नै फुराइ अछि।

प्रदीप- सुनू दीपकबाबू, अहाँकेँ तीनिटा लाल भगवान देने छथि। हुनके सभकेँ पढ़ाउ-लिखाउ आ मनुक्ख बनाउ। बड़का बेटाक बिआह कने जल्दीए कए लेब। घरमे केनिहारि आबि जेतीह। किछु त्याग करू। दू-चारि बरख कष्टे सही। मुदा दोसर बियाहक चक्करमे नै पड़ू।

दीपक- सर, हम अहाँक बात सभ दिन मानैत रहलौं आओर मानैत रहब।

प्रदीप- जदी हमर बात मानी तँ दोसर बियाह भूलोसँ नै करी। दोसर बियाहसँ बाप पीतिया भऽ जाइ अछि। आएँ यौ, सतौत तँ भगवानोकेँ नै भेलनि। तहन मनुक्ख कोन मालमे माल। जदी हमर बात नै मानब तहन जीवन भरि पछताएब दीपकबाबू। एक बेर की कुकर्म कएलौं से ई फल भेटल आओर दोसर कुकर्म फेर करब तहन की फल भेटत की नै।

दीपक- हँ सर, ई कोनो कुकर्महिक फल भोगि रहल छी। आब दोसर कुकर्म नै करब, दोसर बियाह नै करब।

प्रदीप- ई हम ओना नै बुझब, दीपकबाबू। सत्त करू आइ सरस्वती माताक समक्ष।

दीपक- एक सत्त दू सत्त, ब्रह्मा बिष्णु सत्त। जे अहाँक कहल नै करए, से अस्सी कोस नरकमे खस।। हम दोसर बियाह नै करब, नै करब नै करब।

प्रदीप- जौं केलौं तँ पछताएब, पछताएब, पछताएब। दीपकबाबू, आब हम जए रहल छी। आइ ब्लौकमे आपातकालीन बैसार अछि। बेस तँ जय राम जी।

दीपक- जय राम जी। (ठाढ़ भऽ कऽ)

(प्रदीपक प्रस्थान)

प्रदीपबाबू हमरा समाजक बड अनुभवी लोक छथि। हुनक बातक खंडन नै कए सकैत छी। तखन हुनका बेटाक बियाह जल्दीए कऽ लेब आ कमो पढ़ल-लिखलमे कऽ लेब। की करब किछु उपए तँ चाही।

पटाक्षेप

दृश्य- चारिम

(स्थान- दीपक चौधरीक दलान। चारू बापुत आपसमे गप-सप्प कए रहल छथि।)

दीपक- बौआ सभ, अपना सबहक दिन दुर्दिन अछि। बिना पढ़ने काज चलैबला नै अछि। केहेन केहेन पढ़लाहा तँ बौआइ अछि आ अहाँ सभ मुर्ख रहब तहन कुक्कुरो नै पूछत।

मोहन- बाबू जी, आइ काल्हि पढ़नाइ बड महग अछि। बिना टीशन वा कोचिंगकेँ पढ़नाइ असंभव अछि।

दीपक- तैयो पढ़ए बला बिना टीश्न कोचिंगकेँ पढ़ि लैत अछि।

मोहन- से एक सएमे एगो आधगो।

दीपक- खाइर अहाँ सभ कहैत छी तँ कतहु नीक सर लग कोचिंग पकड़ि लिअ।

मोहन- बाबू जी, सुनैत छी जे नीक कोचिंग जे.एम.एस. कोचिंग सेन्टर, चनौरागंज अछि जे श्री बेचन ठाकुर चलबैत छथि। हमरा सभकेँ ओइ कोचिंगमे धराए दिय।

सोहन- मुदा ओइ कोचिंगमे सभ नै पढ़ि सकैत अछि।

दीपक- से किएक?

सोहन- एकर कारण ई अछि जे ओइ कोचिंगक फीस बड करगर अछि आ सेहो अगुरबारे। जहियासँ पढ़ाइ शुरू करू तहिये फीस जमा कए दियौन। नै तँ जय राम जी।

दीपक- ई तँ हुनक कोनो नीक नियम नै भेलनि। पढ़लक नहिए, महीना लागल नहिए, पहिने फीसे चाही। अच्छा, हम ऐ संबंधमे सोचि रहल छी।

गोपाल- बाबू यौ, एगो छौंरा हमरा कहलक की जे हम हुनका लग पढ़ि रहल छी। तोरा पढ़ल होएतौक की नै। कारण, बेचन सर बड मारै छथिन आ बड बुरबक बनबै छथिन। छड़ी जे देखबिहीन तँ बाइ गुरूम भए जेतौ। बाप रौ बाप, यएह मोटके छड़ी।

दीपक- आ पढ़ाइ केहेन होइ अछि?

मोहन- पढ़ाइमे कोनो शिकाइत नै। हुनक चेला सभ डाक्टर, इंजिनियर, मास्टर इत्यादि इत्यादि छन्हि। हमरा मोन होइ अछि बाबू जे हमरा सभकेँ बेचन सर लग कोचिंग धराए दिअ।

दीपक- बौआ, हम असगरे की करबौ। घर करबौ की बाहर करबौ? मए ऐ दुनियाँसँ चलि गेलखुन। भनसा भातमे बड दिक्कत होइ अछि। एगो करू, अहाँ पढ़ाइ-लिखाइ छोड़ू। अहाँ मोहन, ऐ चक्करमे नै पड़ू। कारण एक दिनका वा एक महीना वा एक सालक बात तँ पढ़ाइ नै छी। पढ़ाइमे सालक साल लगै अछि आ तैयो नोकरीक कोनो गाइरेन्टी नै।

मोहन- बाबू, एक बेर अहाँ कहलौं जे बिन पढ़ने काज चलए बला नै अछि। एक बेर कहै छी जे पढ़ाइ छोड़ि दहिन। खाइर पढ़ाइ छोड़ि कऽ हम की करब?

दीपक- की करब? गाममे रहलासँ पेट भरत मोहन बौआ। मोहन बौआ, अहाँ मामाक संग काल्हि दिल्ली चलि जाउ। एक सालक अन्दर अहाँक बियाह सेहो केनाइ अछि। भनसा भातमे बड दिक्कत होइ अछि।

मोहन- बाबू, हम एखन बियाह नै करब। हमरा सबहक उमर एखन बियाह करए बला अछि?

दीपक- अच्छा देखू, की होइ अछि? अहाँ काल्हि दिल्ली चलि जाउ। एम्हर सोहन आ गोपालकँ पढ़ाइक कोनो व्यवस्था देखै छी। पढ़ाइ तँ बड आवश्यक अछि।

सोहन- बाबू, हम भरि दिन बकरीए चरबैत रहब की? कतौ हमर पढ़ाइक जोगार कए दिअ।

गोपाल- बाबू, हमहुँ पढ़ब यौ। हमहुँ पढ़ब यौ।। काबिल बनब हम यौ। गोली-गोली नै खेलब ने गुली डंटा यौ।।

गोली गोली नै खेलब यौ, गुल्ली डन्टा नै खेलब यौ।।

दीपक- अच्छा, काल्हि अहाँ दुनू भाँइकँ गंज मिडिल स्कूलमे नाओं लिखाए दैत छी। सुनैत छी जे गंज मिडिल स्कूलक पढ़ाइ बढ़ियाँ छै। संग-संग खिचड़ी, किताब, पाइ, डरेस, टाइ बैच, बेल्ट इत्यादि सेहो भेटत। ओइ स्कूलमे पढ़लासँ बड नफ्फा? बौआ सभ, हम पढ़ल छी कम्मे। मुदा बुझैत बड छी। केहेन-केहेन पढ़ुआकँ कान काटि लैत छी।

गोपाल- बाबू तहन काल्हि हमरा सभकँ गंज स्कूलमे नाओं लिखाए देब ने?

दीपक- आब काल्हि हएत तहन ने।

पटाक्षेप

पाँचिम दृश्य

(स्थान- बलवीर चौधरीक घर। बलवीर चौधरी एकटा पंचायत शिक्षक छथि। हिनक पत्नी सुनीता देवी छथिन। मंजू आ संजू हुनक सुपुत्री। बलवीर आओर सुनीता रविकेँ आपसी गप-सप्प कए रहल छथि।)

सुनीता- स्वामी, एगो बेटा अपनो सभकेँ रहितए।

बलवीर- एहेन बात किएक बाजलौं अहाँ? कि हमरा लोकनि नि:सन्तान छी? की बेटी बेटासँ कम होइ छै? अपना अपना जगहपर कियो ककरोसँ कम नै होइ छै।

सुनीता- स्वामी, मोन होय अए जे एगो बेटा होएताए। मुदा आब कोन उपाए?

बलवीर- यै, अहाँ मोनकेँ किएक बौआबैत छी एतेक? जहन बुझैत छी जे ऑपरेशन कराए लेने छी, तखन बेकार मोनकेँ भरमेनाइ।

सुनीता- से तँ ठीके कहैत छी मुदा।

बलवीर- मुदा की? मुदा तुदा छोड़ू। यै, बेटा बेटी जनमेलासँ नै होइ अछि। ओकर प्रतिपाल चाही अएँ यै, अपन मंजू आ संजूक आगू किनकर बेटा कोनो कलामे टीक सकैत छथि। रूप आ गुणमे ओ सभ किनकोसँ कम अछि? एना अपने आपपर घमंड नै करबाक चाही। अपना सभ दुनू परानीमे गप करैत छी।

सुनीता- यौ, संतोषम् परम सुखम्। अपन दुनू बेटीकेँ खूब मोनसँ पढ़ाए-लिखाए कऽ डाक्टर-इंजिनियर, एस.पी., कलक्टर बनाउ आ समाजमे

खूब प्रतीक्षा पाउ। बहुते जनमा कए कुक्कुर-बिलारि जकाँ रोडपर ढंगरा कऽ कोन प्रतिष्ठा, कोन फेदा?

बलवीर- थैंक्स यू वेरी मच, सुनीता। आब अहाँ लाइनपर एलौं। एहिना सदिखन बुद्धि विवेकसँ काज करी।

पटाक्षेप-

छठम दृश्य

(स्थान- हरिश्चन्द्र चौधरीक घर। हरिश्चन्द्र चौधरी एकटा गरीब किसान छथि। हुनक पत्नी राधा देवी छथि। हुनका दर-दुनियामे एक्केटा बेटी शालिनी अछि। हरिश्चन्द्र चौधरी निपुत्र छथि।)

हरिश्चन्द्र- यै शालिनी माए, हमरा लोकनि भगवानकेँ की बिगाड़लियनि जे ओ अपना सभकेँ एगो आ सिरीफ एगो बेटीएटा दए भाभट समटि लेलनि।

राधा- ऐ बातक हमरो बड़ छगुन्ता लागि रहल अछि। भगवानक महिमा अगम अथाह अछि। केकरो बोरे-बोरे नून, केकरो रोटियोपर नै नून।

हरिश्चन्द्र- खाइर छोड़ू, माथा पेच्चीबला गप-सप्प। भगवान जएह देलनि सएह बहुत। ओनो हम बड़ गरीब सेहो छी। जदी भगवान हमरा बेसी धिया-पुता दइतथि तँ हमरा ओकर प्रतिपाल नै कएल होएतए। मात्र तीन परानीक पेट तँ पहाड़ बुझाइत रहैत अछि।

राधा- यै शालिनी बाप, जे भगवान मुँह चीरैत छथिन ओ आहारक जोगार अवस्स करै छथिन। शालिनीकेँ पनरह सोलह बरख भए गेल। मुदा दोसर संतानक कोनो उम्मीद नै देखए पड़ै अछि। जबकि कतेकोकेँ देखैत आ सुनैत छी जे अल्ट्रासाउण्डसँ जाँच करए बेटीकेँ गिरबौलनि, सुइया-दवाइसँ गर्भ नाश करौलनि इत्यादि। मुदा हमरा भगवान.....।

हरिश्चंद्र- यै शालिनी माए, गर्भपात बड घिनौना काज थिक, बड पैघ पापीक काज थिक। ओइ जनानीकेँ धौजनि-धौजनि भए जाइत अछि कोनो

करम बाँकी नै रहैत अछि जे गर्भ नाश कराबेत अछि। कतेको जनानी ऐ बेत्थैँ सुरधामो चलि जाइत अछि।

राधा- रामक नाम लिअ, छोड़ू ई कुकर्मक गप-सप्प। यौ, अपन शालिनीकेँ गरीबीक कारणे पढ़ाएल-लिखाएल तँ नै होएत। मुदा घर-गृहस्थी तँ जरूर सीखए देबैक।

हरिश्चंद्र- यै शालिनी माए, अहाँ बुच्चीकेँ पढ़ाबए लेल हिम्मत किएक हारैत छी? कोशिश नै छोड़ू शालिनी दाइक पढ़ाइ बास्ते हम यथासंभव पूर्ण कोशिश करब। आगू सरस्वती माताक किरपा। अपन करम करी फलक चिन्ता जुनि करी।

पटाक्षेप

सातम दृश्य

(स्थान- दीपक चौधरीक घर। वार्ड सदस्य प्रदीप कुमार ठाकुर दीपक चौधरीक घर घुमैत- घुमैत पहुँचैत छथि। दुआरिपर कियो नै छथिन।)

प्रदीप- दीपकबाबू! दीपकबाबू! दीपकबाबू।

दीपक- (अन्दरहिसँ) हँ हँ के छी? आबि रहल छी। कने बैसु श्रीमान् भात पसाबैत छी। यएह शीघ्र आबि रहल छी।

(प्रदीप कुर्सीपर बैस जाइ छथि। शीध्र दीपकक प्रवेश)

दीपक- परणाम सर।

प्रदीप- परणाम् परणाम। कहु दीपकबाबू, की हाल चाल?

दीपक- सर, हाल-चाल करीब-करीब ठीके जकाँ अछि मुदा।

प्रदीप- मुदा की।

दीपक- मुदा यएह जे हाथ-पएर अपने झरकाबए पड़ैए।

प्रदीप- बड़का बेटाक बियाह कने जल्दीए कऽ लिअ। सुनलौं, अहाँक बड़का बेटा दिल्लीसँ बढ़िया पाइ-कौड़ी पठाबैत छथि।

दीपक- हँ सर, ठीके सुनने हएब। गुजर करै जोग जरूर पठबै छथि।

प्रदीप- दीपकबाबू, अहाँक परिस्थिति देख हम सलाह दै छी जे अहाँ बड़का बेटाक बियाह कए लिअ। दीपकबाबू! ई चानन फटक्का कहियासँ यौ। ई तँ हम ध्याने नै देने रही।

दीपक- सर, यएह हालहिसँ। पत्नीक मृत्युक पश्चात् हमर मोन बदलि गेल। पियोर बाबाजी तँ नै, गृहस्थौआ बाबाजी बनि जेबाक निर्णए केलौं। की अहाँकेँ खराबो लागि रहल अछि?

प्रदीप- नै यौ। हमरा तँ बड नीक लागि रहल अछि। बाबाजी बननाइ कोनो खराब बात अछि, बड़ नीक बात अछि। सिरिफ एकटा हमर विनती अछि जे बाबाजी धर्मक पूर्ण पालन करब आओर मरितहु दम धरि भ्रष्ट नै हएब।

दीपक- सर, अपने बड अनुभवी व्यक्ति छी। एहेन अनुभवी व्यक्ति ओ वार्ड सदस्य आइ काल्हि भेटब कठिन। सर, हम अपनेक प्रत्येक सलाहकेँ पूर्ण करबाक हार्दिक प्रयास करब।

प्रदीप- दीपकबाबू, आब चलबाक आज्ञा देल जाउ। जय राम जी की।

(उठि कऽ प्रस्थान)

दीपक- (उठि कऽ) जय राम जी की। हम चाहैत छी जे शुरूए लगनमे मोहनक बियाह कऽ ली। कने कम्मो सम्मो दहेज भेटत तँ कोनो बात नै। मुदा कुल कन्या नीक हेबाक चाही।

पटाक्षेप-

दोसर अंक

पहिल दृश्य

(स्थान- महेन्द्र पंडितक आवास। महेन्द्र पंडित दीपक चौधरीक नङोटिया संगी। दीपक अपन संगी महेन्द्रक ओइठाम जा रहला अछि)

दीपक- महेन्द्रबाबू, यौ महेन्द्रबाबू, महेन्द्रबाबू।

महेन्द्र- हँ, हँ, आबि रहल छी। कने बरतन गढ़ैमे हाथ लागल अछि। बैसू, तुरत एलौं।

(दीपक बैस जाइत छथि। शीघ्र महेन्द्रक प्रवेश होइ छन्हि।)

महेन्द्र- जय रामजी की दोस।

दीपक- जय रामजी की।

महेन्द्र- कहु दोस, आइ केम्हर सूर्य उगलैए? कहु कनिया-बहुरिया ओ धिया-पुताक हाल चाल।

दीपक- दोस, अहाँ एखन धरि नै बुझलौं। कनिया हमर पौंरे साल स्वर्गवास भए गेली। खूनी बेमारी भए गेल छलनि। मुदा धिया-पुताक कुशल बढ़ियाँ अछि।

महेन्द्र- बेटा-बेटी कए गो अछि दोस?

दीपक- कहाँ कोनो बेसी अछि। मात्र तीनिटा बेटे अछि बेटी नै।

महेन्द्र- तहन तँ जीतल छी दोस। अगबे चानीए अछि।

दीपक-	दोस अहाँकेँ?

महेन्द्र-	हमहुँ कोनो बेजाए नै छी। हमरो चारिटा बेटे अछि।

दीपक-	तहन तँ अहाँकेँ सोने अछि।

महेन्द्र-	आब कहु दोस, केमहर-केमहर पधारलौं अछि?

दीपक-	यएह, बड़का बेटा मोहनक लड़िकीक जोगारमे। अपने गाम-घरमे वा आस-पासमे कोनो नीक लड़िकी नै अछि?

महेन्द्र-	यौ लड़िकीऽ......, लड़िकीक बड़ अभाव देख रहल छिऐ। हमरा गाममे बेसी लड़िके देखाइ अछि। चौधरी टोलमे एक दिन कियो बजैत छलाह जे हमरा टोलमे नामो लए बेटी नै अछि। किनको एगो बेटा, किनको दुगो, किनको पाँच गो।

दीपक-	ई तँ समस्या बुझाए रहल अछि दोस। खाइर देखैत छी अपन मामा गाममे जा कऽ। बेस तहन, जय राम जी की।

महेन्द्र-	जय रामजी की।

(दीपकक प्रस्थान)

पटाक्षेप

दोसर दृश्य

(स्थान- सुरेश कामतक मकान। सुरेश कामत दीपक चौधरीक मामा छथिन। दीपक सुरेश ओइठाम पहुँच रहला अछि। दीपकक ममियौत भाए सोनू छथि।

दीपक- मामा, मामा, सोनू, सोनू, मामी, मामी

(दीपक सोर पाड़ैत-पाड़ैत अन्दर घुसैत छथि। फेरि शीध्र मामाक संग प्रवेश। दुनू कुर्सीपर बैस कऽ लड़िका-लड़िकीक संबंधमे गप-सप्प करैत छथि।)

सुरेश- कहऽ भागिन, पहिने घरक हालचाल।

दीपक- माँ सरस्वतीक किरपासँ आ अपने सबहक चरणक दुआसँ सब ठीके अछि। मुदा एगो गड़बड़ अछि।

सुरेश- से की भागिन?

दीपक- से यएह जे कनियाँकेँ मूइलाक उपरान्त हमरा भनसा-भातमे, घर-गृहस्थीमे बड़ कष्ट होइ अछि। कोनो लड़िकीक सुर-पता अछि मामा श्री अपन बड़का बौआ लेल।

सुरेश- हँ हँ, बलवीर चौधरी एक दिन बजैत छलाह जे हमरा ऐ बेर एगो कन्यादान केनाइ अछि।

दीपक- लड़िकी अहाँ देखने छिऐ मामा?

सुरेश- हँ, हँ, जरूर देखने छिऐ। लड़िकी तँ सएमे एगो अछि।

दीपक- मामाश्री, कने हुनका अइठाम जा कऽ बुझियौ।

सुरेश- बेस भागिन, अहाँ घर जाउ। जदी लड़िकीकेँ नै भेल होइतनि, तहन ई कुटमैती अवस्स कराए देब।

दीपक- पार्टी केहेन अछि मामा?

सुरेश- पार्टी गरीबे जकाँ अछि। ओना पहिने हमरा बलवीर चौधरी ओइठाम जाए दिअ तहन ने।

दीपक- बेस, जाउ मामाश्री।

(सुरेशक प्रस्थान)

पटाक्षेप

तेसर दृश्य

(स्थान- बलवीर चौधरीक घर। सुरेश चौधरी बियाह-दानक संबंधमे गप करए पहुँचि रहल छथि। बलवीर दलानपर कुर्सीपर बैसल छथि। तखने सुरेशक प्रवेश)

सुरेश- नमस्कार, बलवीरबाबू।

बलवीर- नमस्कार, नमस्कार। आउ पधारल जाउ।

(सुरेश कुर्सीपर बैसैत छथि)

बौआ टुनटुन, बौआ टुनटुन, एक लोटा जल लेने आउ। एकटा अभ्यागत पधारला अछि।

(टुनटुनकेँ एक लोटा जल लए कए प्रवेश)

सुरेशबाबू, चरण पखारल जाउ।

सुरेश- आगू-पाछू हएत ने?

बलवीर- आगू-पाछूबला कोन बात करै छी। मिथिलाक जे रिवाज अछि से निभाबहि पड़त। पहिने चरण पखारू तहन कोनो बातचीत हएत।

सुरेश- बलवीरबाबू, यद्यपि हम वर पक्षसँ आएल छी। मुदा किछु बात बनत तहन ने चरण पखारब। हमर बाप-ददाक कहब छलनि। ओइ परम्पराकेँ हम कोना बिसरि सकै छी? होउ, गप किछु आगू बढ़ाउ।

बलवीर- बाजू तखन, केम्हर-केम्हर एलौं अछि?

सुरेश- किछु दिन पूर्व अपने हमरा लग बाजल रही जे हमरा ऐ बेर एगो कन्यादान केनाइ अछि। ओ कुटमैती अपने केलौं वा नै।

बलवीर- कहाँ केलौं। नै ओतेक सम्पत्ति अछि आ ने कन्यादन कए पाबैत छी। घर तँ वर नै, वर तँ घर नै। की अहाँक नजरिमे कोनो लड़िका अछि?

सुरेश- हँ अछि, हमरे भागिन।

बलवीर- केहेन घर-वर अछि?

सुरेश- अपना चशमसँ अपने देखब, से बिल्कुल ठीक हएत। ओना हमरा समझसँ, नै बढ़ियाँ तँ खरावो कियो नै कहि सकै छथि।

बलवीर- अहाँक विचारसँ ई कुटमैती करैबला अछि?

सुरेश- हमरा विचारसँ ई कुटमैती आँखि मुनि कऽ कए लिअ। लड़िका-लड़िकी एकदम जोगम-जोग अछि।

बलवीर- सुरेशबाबू, जदी हम ई कुटमैतीमे ठकेलौं तहन हमर गृहणी कोरमे जीवन भरि चटक करैत रहतीह। से यादि राखि लिअ। सुरेशबाबू, हम हुनकामे सकबैन की नै।

सुरेश- नै सकबैन तँ हम सकए देब। हम छी ने। आदर्श कुटमैती हएत।

बलवीर- जहन अपने ई डिट्टो पावर लगाबैत छी, तहन हम नै देखब-तेखब। एक्के बेर काल्हि छेके कए लेब। ई कुटुमैती पक्के बुझु। आबहु चरण पखारब की नै?

सुरेश- आब चरणहिटा पखारब! जे नै से करब। पान, बीड़ी, सुपारी, सीगरेट, नश्ता, भोजन सबटा करब। पाछू काल कने समधीनो लग जाएव, फुसुर-फुसुर बतियाएब। तहन गाम वापस जाएब।

(पएर धोलनि)

बलवीर- बौआ टुनटुन, अन्दरसँ नश्ता पानि लाउ।

(टुनटुन अन्दरसँ नश्ता, पान, बीड़ी, सलाइ, सुपारी आनै छथि। सुरेश ओ बलवीर नश्ता कए पान, सुपारी, बीड़ीक उपयोग करै छथि।)

सुरेशबाबू, हम ठहरलौं एकटा साधारण वा गरीब लोक। हम की नश्ता कराएब, की व्यवस्था करब?

सुरेश- बाप रे बा..., एहेन नश्ता तँ हम बापो जनम नै खेने रही। मोन तँ गदगद भए गेल। आब चलबाक आज्ञा देल जाउ। कने भागिनो अइठाम जेबाक अछि अखने। तहन ने काल्हि ओ सभ छेका-छुकीक व्यवस्था करताह। बेस, जाय राम जी की।

बलवीर- जय राम जी की। कहल सुनल माफ करबै सरकार।

(सुरेशक प्रस्थान)

पटाक्षेप

चारिम दृश्य

(स्थान- दीपक चौधरीक घर। मोहनक छेकाक पूर्ण तैयारी। दलानपर एकटा डोलमे पानि आ लोटा राखल अछि। कुर्सीपर बैसि कऽ प्रदीप कुमार ठाकुर पेपर पढ़ि रहल छथि। किछुए देर पश्चात सुरेश कामत, बलवीर चौधरी, गंगाराम चौधरी, चन्देश्वर चौधरी आ हरे राम सिंहक छेकाक सामग्रीक संग प्रवेश। गंगाराम आ चन्देश्वर बलवीरक क्रमश: छोट भाए आ पैघ भाए छथिन। हरे राम सिंह बलवीरक बुजुर्ग पड़ोसी छथि। गंगा रामक हाथमे छेकाक श्रमजान अछि। दुआरिपर दसटा कुर्सी लागल अछि।)

प्रदीप- (ठाढ़ भऽ कऽ) नमस्कार कुटुम, नमस्कार कुटुम, नमस्कार कुटुम। (कल जोड़ि दुनू तरफसँ नमस्कार पाती भए रहल अछि)

आउ, आउ, पधारल जाउ, पधारल जाउ। पहिने सभ कियो चरण पखारू।

(सभ कियो चरण पखारि रहल छथि आ बारी-बारीसँ कुर्सीपर बैसैत छथि)

सुरेशबाबू, कने हम अन्दरसँ आिब रहल छी।

सुरेश- बेस आउ।

(प्रदीप अन्दर जा कऽ दीपकक संग आबै छथि।)

दीपक- नमस्कार समधि, नमस्कार कुटुम, प्रणाम मामाश्री।

(कल जोड़ि दुनू तरफसँ नमस्कार पाती भेलनि।)

कहु समधि, अपने सभ कियो आबि गेलिऐ।

बलवीर- हँ, हँ, हमरा लोकनि सभ कियो आबि गेलौं।

दीपक- धन्यवाद। बौआ गोपाल, गोपाल।

(अन्दरसँ गोपाल कहलनि- जी बाबूजी)

कने एम्हरौ धियान देब बौआ।

(गोपाल नश्ता लऽ कए प्रवेश ट्रे मे। संगमे सोहन सेहो छथि। सोहन सभकेँ नश्ता दैत छथि। सभ कियो नश्ता कए हाथ मुँह धोइ कऽ बैसै छथि)

प्रदीप- गोपाल बौआ, कने चाह-पान, बीड़ी-सुपारी, सिकरेट-सलाइ सेहो देखहक।

गोपाल- जी चच्चा, जाइ छी।

(गोपाल अन्दर जा कऽ ट्रेमे सभ किछु आनैत छथि। सोहन सभकेँ पहिने चाह दैत छथि पीवलाक पश्चात पान-बीड़ी-सिकरेट दैत छथि। जनिका जे मोन होइ छन्हि से लै छथि। नश्ता-पानिसँ सभ निवृत छथि। सोहन ओ गोपाल ठाढ़ छथि)

सुरेश- भागिन, बौआकेँ बजाउ। गामपर कियो नै छथि। भैंस हमरे हाथपर लगै अछि।

दीपक- हँ, हँ, आबि रहल छथि। तैयार भए रहल छथि।

प्रदीप- सुरेशबाबू, अहाँक भैंस अहीं हाथपर लगै अछि। भैंस बड़ दुलारि छथि। सुरेशबाबू छेका-छुकी तँ हेबे करत। पहिने दस आदमीक

बीचमे लेन-देन फाइनल भऽ जाए। बादमे तू-तू-मै-मै कइलासँ प्रतिष्ठे जाइ अछि।

हरेराम- सुरेशबाबू, प्रदीपबाबूक गप्प हमरा बड्ड नीक लागल। हदमद्दीसँ नीक उल्टीए। बाजू, प्रदीपबाबू अहीं, केना की लेन-देन?

प्रदीप- हम नै बाजब। बजताह सुरेशबाबू। कुटुमकेँ वएह आनलथि। केना की गप केलखिन, से तँ वएह ने कहताह।

हरेराम- बाजू सुरेशबाबू, केना की गप्प?

सुरेश- कोनो गप्प-सप्प नै। हम बलवीरबाबूकेँ यएह कहलियनि जे ई कुटमैती करैबला अछि आ ओ भऽ कऽ रहत। ऐमे हम पड़ल छी।

गंगाराम- तहन छेकामे विलंब किएक सुरेशबाबू? एत्ते टाइल गुल्ली खेलाबाक कोन प्रयोजन? एत्ते कियो छिरहारा खेलए।

चन्देश्वर- यौ सुरेशबाबू, सभटा अहींक चक्कर चालि छी। कहलौं आदर्श कुटमैती आ देख रहल छी बटुआ भरू कुटमैती। अऍं यौ, एखुनका युगमे अल्ट्रासाउडक युगमे लड़िकोक अभाव अछि। ओइ हिसाबे लड़िकीएक बड़ अभाव अछि। हमरा ई कुटमैती नै करबाक अछि।

हरेराम- हरबराउ नै बौआ। नवका कुटमैतीमे एहिना तोड़-जोर हेइ अछि। अहाँ शांत रहु। देखियौ की होइ छै? माँ सरस्वतीक किरपा हेतैन तँ भऽ जाएत। कोनो काज हरबराए कऽ नै करी।

प्रदीप- हरेरामबाबू, चन्देश्वरबाबू एतेक गैसमे किएक आबि गेलाह। कोनो कुटमैती केने छथि की नै।

गंगाराम- हँ, हँ, अहींटा कुटमैती केने छी। आ देखने छी। हमरा एहेन दलालबला कुटुमैती नै करबाक अछि। लड़िकाक लेल दुनिया, बड़ीटा अछि।

प्रदीप- गंगारामबाबू, अहूँ बड़ भासि रहल छी। कने होशमे बात करू।

हरेराम- ओम शांति, ओम शांति, ओम शांति। कृपया सभ कियो शान्त होउ। हल्ला गुल्ला नै हेबाक चाही। प्रदीपबाबू, कने दीपकबाबूसँ एक बेर अंदर जा कऽ विचार करियौ। ओना आधुनिक युगमे बेटीक बड़ अभाव अछि आओर बेटा भरमार अछि।

प्रदीप- ठीक कहलौं हरेरामबाबू, कने हम आ दीपकबाबू अंदरसँ आबि रहल छी।

(दीपक आ प्रदीप अन्दर गेलाह। कुटुम लोकनि दुआरिपर बैसल छथि। फेर सुरेश सेहो अन्दर जाइ छथि। तीनू अंदरमे गप्प करै छथि।)

सुरेश- भागिन प्रदीप, हमर प्रतिष्ठा बचाउ। हम हिनका सभकेँ कहि देने छियनि जे वियाह आदर्श हएत।

दीपक- से बिना बुझने अहाँ किएक कहि देलिऐ।

सुरेश- से हम बड़ पैघ गलती केलौं।

दीपक- अहाँकेँ कम-सँ-कम पाँचो लाख टाका नगद आ अलावे सब समान कहबाक चाही की ने। बुढ़ पुरान भऽ कऽ भसिया जाइ छी मामा।

सुरेश- तोहर जे मोन छह, तइपर कुटमैती नै हेतह भागिन। जाह, दोसरे कए लिहह। हमरा एतेक मोलाइमे सम्हारल नै होएत।

(अन्दरसँ खिसिया कऽ आबि दुआरिपर बैसै छथि।)

प्रदीप- आब ई कुटमैती लागि रहल अछि जे नै सम्हरत। दीपकबाबू, छोड़ू लोभ-लालच। कहबी अछि- लोभ: पापस्य कारणम्। अहाँ मामाश्रीकेँ कसि कऽ पकड़ू। कुटमैती तँ केनाइ अछि। आदर्शे रहए दियौक। अन्यथा अहुँक प्रतिष्ठा चलि जाएत आओर ममोक प्रतिष्ठा चलि जाएत। दुआरिपर सँ एहेन सम्हरल कुटुमकेँ नै घुमैबाक चाही।

दीपक- तहन की कएल जाए, सर?

प्रदीप- कने मामाश्रीकेँ बजाबियौन आ हुनकेपर सभटा छोड़ि दियौन।

दीपक- बेस सर, मामाश्रीकेँ बजाबै छियनि।

(बाहर आबि मामाश्रीकेँ कहै छथि।)

मामाश्री, यौ मामाश्री, मामाश्री यौ?

सुरेश- की कहै छी?

दीपक- कने प्रदीपबाबू भीतर बजाबै छथि।

(सुरेश अन्दर जाइ छथि। प्रदीप, दीपक आ सुरेश अन्दरमे गप-सप्प करै छथि)

प्रदीप- अहीं जे-जेना करबै सुरेशबाबू, सएह हएत। एतऽ प्रतिष्ठाक सवाल अछि। खाली एना करबाक प्रयास करबैन जाइसँ साँपो मरि जाए आ लाठीयो नै टूटए।

सुरेश- चलै-चलह दुआरिपर। कुटुमो की कहैत हेताह। की नै। हम एक्के बेर बाजबह। ओइमे गुंजाइश हेतह तँ करिहह, नै तँ तोहूँ घर, उहो घर।

(सभ दुआरिपर आबै छथि)

बलवीर- हरेरामबाबू, कने पुछियनु, की केना विचार भेलनि?

हरेराम- सुरेशबाबू, की केना विचार भेल? हमरा सभकेँ जल्दी कहु। बड़ विलंब भए रहल अछि।

सुरेश- हम हिनका सभकेँ कहलियनि जे बलवीरबाबू नवका टीचर छथि। ई बेचारा गरीबे छथि। ई आदर्श वियाह करताह। ताहुमे ओ कोनो अन्न-छेरू नै छथि, मुर्ख-गमार नै छथि जे ठकि लेताह। बेचारा लड़िकीबला अपना मुँहसँ कहलाह जे हम जे किछु देबनि। से अपन बेटी-जमाएकेँ देबैन ने, किनको आनकेँ देबैन फेर ओ बजलनि जे हम ओतेक जरूर देबैन जाहिसँ कोनो पक्षकेँ प्रतिष्ठापर नै पड़ए।

प्रदीप- बस करू। लेन-देनक गप्प खतम करू आओर छेका-छुकीक कार्यक्रम शुरू करू। की यौ दीपकबाबू, गप्प मंजूर अछि की नै?

दीपक- जाउ, अपने सभ जे जेना करियौ। मंजूर अछि।

हरेराम- तहन दीपकबाबू, पुरहितकेँ खबर केने छी?

दीपक- आइ भिनसरे खबर केलियनि। ओ अएलो छथि। कखनो देखने रहियनि। केनो जजमान ओइठाम गेल हेताह।

हरेराम- कने जल्दी, पुरहितोकेँ देखियौन्ह आ लड़िकोकेँ बजाउ।

प्रदीप- जाउ बौआ सोहन, पुरहितकेँ जल्दी ताकि आनू।

(सोहन अंदर जाइ अछि)

बौआ गोपाल, भैयाकेँ बजाउ।

(गोपाल सेहो अंदर जाइ अछि। पहिने पुरहितक संग सोहनक प्रवेश। पुरहितकेँ सभ कियो साग्रह बैसाबैत छथि। तहन गोपालक संग मोहनक प्रवेश। मोहन सभकेँ पएर छुबि प्रणाम करै छथि आ सभ कियो आशीर्वाद दै छथिन)

हरेराम- बैसु बौआ।

(मोहन बैसि जाइ छथि)

की नाम छी?

मोहन- मोहन कुमार चौधरी। *(ठाढ़ भऽ कऽ)*

हरेराम- पिताजीक की नाम छी?

मोहन- श्री दीपक चौधरी।

हरेराम- परदादाक नाम की छी?

मोहन- (असमंजशमे पड़ि) नै बुझल अछि।

हरेराम- खाइर छोड़ू, कोनो बात नै। अहाँ करैत की छी?

मोहन- दिल्लीमे एक्स-पोर्टमे छी।

हरेराम-	अच्छा, बैस जाउ। (मोहन बैस जाइ अछि) पुरहित, आब अपन कार्यक्रम शुरू कएल जाए। बड़ विलंब भए गेल।

बौआ-	हँ हँ, हमहुँ एक दुपहरिया एलौं। एम्हर-ओम्हर घुमि रहल छलौं विलंब देख। आउ बौआ, पीढ़ियापर बैसू।

(मोहन पीढ़ियापर आ पुरहित कंबलपर बैसै छथि कलशमे पानि छन्हि। बौआ झा दीपकसँ कुश मंगबैत छथि)

सुनू कुटुम सभ, हम विधेटा पुराएव। कारण छेकाकँ बड़ लेट भए रहल अछि। समए सेहो ठंढ़ीक अछि।

सुरेश-	पंडीजी, अहाँकँ जे नीक लगए से करू।

बौआ-	पढ़ु बौआ, ओम श्री गणेशय नम: -5

मोहन-	ओम, श्री गणेशय नम: -5

बौआ-	ओम श्री गौरीके शंकराय नम: -5

मोहन-	ओम श्री गौरीके शंकराय नम: -5

बौआ-	ओम, श्री बराय नम: -5

मोहन-	ओम, श्री बराय नम: -5

बौआ-	ओम, श्री कन्याय नम: -5

मोहन-	ओम, श्री कन्याय नम: -5

बौआ-	ओम श्री शुभ बियाहै नम: -5

मोहन- ओम श्री शुभ बियाहै नम: -5

(अन्दरमे छेकाक गीत भए रहल अछि। छेकाक डाली मोहनक दुनू हाथमे गंगाराम देलखिन)

बौआ- बौआ जाउ, डाली गोसाइ लग राखि आउ। सभकेँ गोर लगियौन।

(मोहन डाली अन्दर राखि अबै छथि सभकेँ पएर छुबि गोर लगैत छथि। कुटुम सभ हुनका गोर लगाइ दै छथि)

दीपकबाबू, हमरा दक्षिणा दिअ। हमरा बड़ विलंब भए रहल अछि।

दीपक- भोजन-साजन कए लिअ आ रातिमे एत्तै विश्राम करू।

बौआ- भोजन-साजन कए लेब, से संभव अछि। मुदा रात्रि विश्राम असंभव अछि। यौ बाबू हमर कन्या बड़ डरबुक छथि। बिना हमरा रहने हुनका नीने नै होइ छन्हि।

प्रदीप- बलवीरबाबू, अहाँ वियाह कहिया करए चाहै छी?

बलवीर- अहाँ जहिया करू।

प्रदीप- पंडीजी, कने बियाहक दिन देखियौ।

(पंडिजी पतरा देखै छथि)

बौआ- काल्हुक दिन अछि। परसुओक दिन अछि। चारम-पाँचम-छठम दिन नै अछि। फेर सातम दिन अछि।

(एक सए टाका लऽ कऽ प्रस्थान)

प्रदीप- बलवीरबाबू, अहाँकेँ कोन दिन पसीन अछि?

बलवीर- हम बेटीबला छी। हमरा बड ओरियान करए पड़त। हम सातम दिनका विआहक दिन मंजूर करैत छी।

प्रदीप- बेस, बियाहक दिन फैनल भए गेल, सातम दिनका। गोपाल कने भोजनक जोगार देखहक।

गोपाल- (गोपाल अन्दर जा कऽ आबि) चच्चा भोजन तँ तैयार अछि। भोजन सराए रहल अछि।

प्रदीप- हरेरामबाबू, चलै-चलू भोजन करए। सोहन बौआ, लोटा आ बाल्टीनमे पानि नेने आउ।

(सोहन अन्दरसँ बाल्टीनमे पानि आनैत छथि)

कुर्रा- उर्रा करैले जाइ-जाउ सरकार सभ।

(सभ कियो कुर्रा कए तैयार छथि)

चलै चलू भोजनमे।

(सबहक प्रस्थान)

पटाक्षेप

पाँचिम दृश्य

(स्थान- बलवीर चौधरीक आवास। बियाहक तैयारी पूर्ण भए गेल अछि। जयमालाक मंच तैयार आ सजल अछि। मचक आगू बाल्टीनमे लोटा आ पानि अछि। कुर्सीपर गंगा राम चौधरी बैसि कऽ ओङहा रहल छथि।)

गंगाराम- (नीनमे) हमहुँ बेटाक वियाह करब। दहेजमे एगो उजरा आ एगो करिया बत्तु लेब। ठाँठ बकरी लेब सेहो जरसी। कनिया लेल कानमे बुलकी लेब। अपना लेल एगो फाटलो-चिटलो कनिया लेब। बाआ लेले एगो गदहा लेब। अपना कनिया लेल ठोररंगा लेब। एगो मोचना लेब। ओइसँ अपन कनियाकेँ सौंसे देहक केश उखारि देबैन। आओर नगद एगारह लाख एगारह सए टाका, डालीमे एक लाख मच्छर आ समधी मिलानमे एक हजार एक उड़ीश लेब। आओर पुतौह लेल.....।

(चन्देश्वर चौधरीक प्रवेश)

चन्देश्वर- गंगा राम, गंगा राम, रौ गंगा राम।

(गंगाराम फुरफुरा कऽ उठि खसैत-पड़ैत)

गंगाराम- जी भैया, जी भैया, केम्हर गेलीह भौजी?

चन्देश्वर- सपनाइत छँ की?

गंगाराम- नै भैया, अपन बेटाक छेकामे गेल रही।

चन्देश्वर- नीन तोड़ू मुँह-हाथ धोउ।

(अन्दरसँ दुइ-चारिटा बमक आवाज होइ अछि।)

गंगाराम लगै अछि बरयाती आबि रहल अछि।

गंगाराम- आबए दियौन। कटहर-चूड़ा खेताह। एतेक अबेर आएल बरयातीकँ की स्वागत हएत? अपन ठरल-ठरल खाएत आ सिरसिराइत भागत।

(बरयातीक प्रवेश। दीपक चौधरी, मोहन चौधरी, सोहन चौधरी, गोपाल चौधरी, प्रदीप कुमार ठाकुरक आ चारि-पाँचटा हुनक समाजक लोक बरयातीमे आएल छथि। सभ कियो मंचपर विराजमान छथि। पाछू काल सुरेश कामत पहुँचलाह।)

दीपक- गोर लगै छी मामीश्री।

सुरेश- नीके रहू भागिन।

दीपक- बरयाती एबाक मोन पड़ि गेल?

सुरेश- की करबैक भागिन, असगरूआ छी। छेका दिन समएपर महीसकँ नै दुहलौं। तेकर फल यएह भेल, महीस निछए गेल।

(सरयातीक प्रवेश। हरे राम सिंह, बरवीर चौधरी, गंगाराम चौधरी, चन्देश्वर चौधरी आ हिनक अपन समाजक लोक छथि।)

हरेराम- (बरयातीसँ) सरकार सब, चरण पखारल जाउ। बड राति भए गेल। हमर समाजक कतेको लोक चलि गेलाह। नश्तो पानि हेतै। जल्दी चरण पखारल जाउ, सरकार सभ।

(सभ कियो चरण पखारि कऽ बैसैत छथि।अन्दरसँ गंगाराम शरबत, नश्ता, चाह, पान, बीड़ी, सुपारी इत्यादि आनै छथि।नश्ता-पानि

आरामसँ भए रहल अछि। चाह-पानक बाद सरयाती सभ अंदर जाइत छथि। तहन जनानी सभ जयमाला करेबाक लेल एलीह। ओ सभ पहिने परिछनिक गीत गाबि परिछन कए रहलीह फेर लड़िकाक परिक्रमा करए जयमाला कराबैत छथि। तहन लड़िकी लड़िकाक आरती उतारि आ प्रणाम कऽ आशीर्वाद लय सभ जनानीक संग अंदर जाइ छथि। प्रदीप कुमार ठाकुरक प्रवेश)

प्रदीप- (बरयातीसँ) सरकार सभ, भोजनमे चलै चलू।

हरेराम- चलै चलू, बरयाती सभ। भोर होमए जा रहल अछि। चलू, चलै चलू।

(सबहक प्रस्थान)

पटाक्षैप

छठम दृश्य

(स्थान-दीपक चौधरी आवास। दलानपर दीपक चिन्तित मुद्रामे बैसल छथि। ललका धोती आ बदामी कुरता पहिरने छथि। तखने दीपकक एकटा पड़ोसीक प्रवेश जनिक नाम झामलाल महतो छन्हि।)

झामलाल- (दीपकसँ) की यौ दीपकबाबू, बड़ मनहुस देख रहल छी। की कारण छै।

दीपक- नै कोनो खास बात।

झामलाल- जखन कोनो खास बात नै अछि तखन एना चिन्तित किअए छी? हमरा लागि रहल अछि जे समधीन अहाँकेँ अपन ओजारसँ घरमे बन्द कए थुरलनि।

दीपक- छोड़ू मजाक-तजाक। एखन हमरा अनसोहाँत नीक नै लागै अछि। गूड़क मारि धोकरे जानै छै। अपन हारल बौहक मारल छी।

झामलाल- समधीन रातिमे गरम दूध नै पीएलनि?

दीपक- किएक कप्पार खाइ छी? चुपचाप बैसू।

झामलाल- चुपचाप हम किएक बैसब? हम अहीं जेकाँ बौहक मारल छी की? दीपकबाबू, चिन्ता-फीकीर छोड़ू। कहु की भए गेल? (हँसि कऽ)

दीपक- अहाँ नहिए मानब की?

झामलाल- केना मानब? हम किनको उदास देखैले नै चाहैत छी। तइमे अहाँ पड़ोसी छी। हरदम प्रसन्न रहू, प्रसन्न।

दीपक- की प्रसन्न रहब झामलाल? मामापर पूर्ण विश्वास कए ई कुटमैटी केलौं। मामा गरदनिमे फाँस लगा देलक।

झामलाल- से की?

दीपक- यएह जे सोन सनक बेटाकेँ टलहा सनक स्वागत। नै नगद, नै बरतन-बासन, नै कपड़ा, नै लत्ता, ने लकड़ी, नै बकरी, नै डाली-हारी, नै बिदाइ, नै गोर लगाइ। सभ किछुमे ठक-ठक सीताराम।

झामलाल- ई तँ साफे ठकि लेलनि कुटुम। अहाँ एहेन खतम छी, से नै बुझल छल।

दीपक- देलनि कुटुम सभ किछु। मुदा जत्तऽ एक लाख हेबाक चाही ओत्तऽ सिरीफ एक सए। दूधक डारही।

झामलाल- बहुते भेटल दीपकबाबू बहुते। बेचारा नवका मास्टर छथि। जे हुनका संभव भेलनि, से सभ किछु देलनि आ अहींक बेटा कोनो हाकिम-हुकुम छथि की? छोड़ू लेन-दन, दहेज-तहेज। कहु लड़िकी केहेन भेटल?

दीपक- हँ ई पुछलौं खल से। (प्रसन्न भए) लड़िकी तँ सौंसे गाममे एहेन सुन्नरि नै हेतीह। हजारोमे नै लाखमे एगो छथि। देखबनि तँ देखिते रहि जाएब।

झामलाल- तहन अहाँ हारल नै छी, जीतल छी। बाजी मारि लेने छी ऐ अल्ट्रसाउण्डक जुगमे। देखब, किछु दिनक बाद बेटी बिलुप्त भए जेतीह। जौं कतौ-कतौ भेटबो करतीह तँ ओकरा बाबा डिहबार जेकाँ पूजा करए पड़त। ऐ दहेजक जुगमे आ अल्ट्रासाउण्डक जुगमे

बेटी बनि जाएत पीर मियां। ओइमे अहाँ एखन धरि छक्का मारने छी।

दीपक- से तँ जे कही। मुदा दहेजक लोभमे करजा कऽ कए धुमधामसँ बेटा बियाहलौं। ओइमे भेटल डपोरशंख। हम ऐ चिन्तँ मरि जाएब।

झामलाल- हम तँ अहाँकँ कहब जे भगवतीपर भरोसा राखी आ हरदम प्रसन्न रही। मुदा अपनेक जे विचार? हम जए रहल छी दीपकबाबू। हमरा पोखरि दिस लागि गेल अछि। हमरा गोटेक सप्ताहसँ सुलबाइ भए रहल अछि।

दीपक- तहन जल्दी जाउ पोखरि दिस।

(झामलाल धोती पकड़ने भागलथि।)

तँ बड़ी कालसँ महकैत छल। नाक नै देल जाइ छल।
(फेर चिन्तित मुद्रामे बैसै छथि)

एहेन बुझितौं तँ बेटाक बियाह नै करितौं। सोचने रही जे ओ जमीन कीन कऽ मकान बनैबतौं ओ करजा-बरजा झारितौं। मुदा आब तँ करजो सधेनाइ मुश्किल। एक तँ हम बेमार रहैत छी आ दोसर माथपर करजाक बोझ। आब हम ऐ बेत्थँ मरि जाएब, लागि रहल अछि।

पटाक्षेप

अंक तेसर

पहिल दृश्य

(स्थान- दीपक चौधरीक घर। दीपक रोगग्रस्त अवस्थामे माथपर हाथ लेने बैस कऽ खांसि रहल छथि।)

दीपक : (खासैत) आह! ओह! दुनियाँमे कियो ककरो नै। कियो देखनिहार नै। जा धरि पैरूख छल, ताधरि झूठ-फूस, एम्हर-ओम्हर कए बेटा बियाहलौं। मुदा आब कतौ कियो नै। (खांसैत छथि)

(महेन्द्र पंडितक प्रवेश)

महेन्द्र : दोस, बड़ गड़बड़ स्थितिमे देख रहल छी अहाँकेँ। एना किअए? की भए गेल?

दीपक : की हएत दोस? कप्पारमे जे घँसल अछि। सएह ने हएत। (खांसैत छथि)

महेन्द्र : बड खोंखी होइ अछि।

दीपक : की कहु दोस, दम्मा जोर कए देलक। एक्को रत्ती सक्क नै लगैत अछि। तइपर सँ भनसा-भात अपने केनाइ।

महेन्द्र : (आश्चर्यसँ) से किअए? आ पुतौह?

दीपक : पुतौह गेलीह डिल्ली। बेटा नै मानलक हमर बात।

महेन्द्र : कहु दुनियाँ केहेन छै? बेटा-बेटी जनमाबै अछि लोक सुख लए आ आगू दिन लए।

दीपक : मुदा हमर बेटा स्वार्थमे लीन छथि। आब हम ओकर के? दुश्मने ने।

महेन्द्र : एगो गप्प कहु दोस।

दीपक : अवस्स कहू।

महेन्द्र : झांपि-तोपि कऽ दोसर बियाह कए लिअ।

दीपक : मोन तँ होइ अछि दोस। मुदा आब ऐ उमरमे लोक की कहत?

महेन्द्र : लोक की कहत? कियो एक्को सांझ भनसा बनाए देतीह की?

दीपक : ई तँ सपनोमे नै देख सकै छी। अपन जनमल तँ अपन होइते नै अछि आ दोसरक कोन आशा?

महेन्द्र : छोड़ू ई सभ लटारम। दोसर बियाह कए लिअ। सभ अपना-अपना लेल हरान अछि।

दीपक : (मुँह चटपटबैत आ खांसैत) दोस, मोन तँ बड़ड होइत अिछ। मुदा नै, बाबाजी छी। लोक की कहत? हम सरस्वती माताक समक्ष सत्त केने रही। सत्तकैं हम तोड़िओ सकैत छी। मुदा नै नै नै।

महेन्द्र : नै तँ दोसर बेटेकैं बियाहि लिअ।

दीपक : हँ, ई भए सकै अछि। मोहना तँ गेल आब सोहना जे करए। अहाँक नजरिमे दोस, कोनो अछि?

महेन्द्र : एखन नै अछि। ओना लड़िकी बड्ड अभावो भए गेल अछि। जदी नजरिमे आबि जाएत तँ अवस्स कहब। एखन जए रहल छी अपन समधीयौर। समधीनकँ शंकरजी जनम लेलखिन।

दीपक : बेस, तहन जाउ, शंकर जीकँ दरशन करू गे।

(महेन्द्रक प्रस्थान। दीपक खांसैत-खांसैत बेदम भए जाइ छथि।)

पटाक्षेप

दोसर दृश्य

(स्थान- दिल्ली। मोहन आ मंजू बिछौनपर आराम करै छथि। मुर्गाक बाङ सुनि मंजू उठि कऽ अपन पतिक सेवा कए रहल छथि आ किछु गप-सप्प सेहो कए रहल छथि।)

मंजू : (चिट्ठी निकालि कऽ दैत) स्वामी जी, पिताजीक चिट्ठी काल्हि सांझमे अएल छल। लिअ।

मोहन : कने पढ़ियौ ने, की लिखलनि अछि।

मंजू : (चिट्ठी पढ़ै छथि) चिरंजीवी बौआ मोहन, शुभ आशीर्वाद। हमरा बेटा जनमा कऽ की भेल? दम्मासँ तबाह छी। कियो पूछैबला नै। सोहना आ गोपला सदिखन नरहेर जकाँ एम्हर-ओम्हर करैत रहै अछि। तोरा बियाहि कऽ हमरा की भेटल। हँ, एकटा चीज अवस्स भेटल, चिन्ता। खाइर कतउ रहू, नीके रहु।

मोहन : (मंजूसँ चिट्ठी लऽ कऽ फेंकैत) जेहेन करनी तेहेन भरनी। देखैत छेलिएनि जे भरि दिनमे एक-एक मुट्ठा बीड़ी पीब जाइ छथि। तइपर सँ गांजा सेहो धुकैत छथि। एकर फल हुनका नै भेटतनि तँ किनका भेटतनि।

मंजू : स्वीमी, मुदा छथिन तँ ओ जनम दाता। की कहबैन आब हुनका। बुढ़े जकाँ छथि। तहुपर सँ दम्माक तबाही। स्वामीजी, हमर विचार अछि जे दुइ-चारि दिन लेल गाम चलू आ पिता जीकँ देख आबी। हुनको मनमे संतोष हेतनि।

मोहन : भोरहि भोर हमरा मन नै खिसीआउ। गाम जेबामे माल-पानी खरचा होइत छै की नै। बापबला रखने छी तँ चलू।

मंजू : (शांत भऽ) जे कहलौं से गलती केलौं।

मोहन : एखन गाम नै जाएब। एक्के बेर सोहनक बियाहमे।

मंजू : जे मन हुअए, सहए करू स्वामी।

(संजू कुमारीक प्रवेश। संजू अपन पाहुन आ बहिनकँ पएर छुबि प्रणाम करै छथि। दुनू माथपर हाथ दए आशीर्वाद दै छथिन।)

मोहन : (संजूसँ) आइ शीताहल नढ़िया जकाँ अहाँ? केना एतए धरि अहाँ पहुँच पेलौं संजू?

संजू : किएक पाहुन, हमरा अहाँ बुरबक बुझैत छी की? अहुँसँ हम काबिल छी, से बुझि लिअ।

मोहन : हँ हँ, से तँ अहाँ छी। कहु असगरे केना-केना एलौं?

संजू : गामपर बस धेलौं पटना एलौं आ पटनामे राजधानी पकड़ि दिल्ली टीशन एलौं। दिल्लीमे टेक्सी पकड़ि अहाँ लग एलौं। नम्बर-पता अहाँ हमरा देनहि रही।

मोहन : खाइर एतेक अचानक अहाँक एबाक कारण?

संजू : 26 जनवरी नजदीक छै। ओइमे परेड देखए हेतु प्रोग्राम अचानक बनि गेल।

मंजू : ऐ बीच लाल किला, इंडिया गेट, ताजमहल, लोटस टेम्पल, चिड़िया-घर इत्यादि पाहुन सेहो देखाए आनथुन। आब बुच्ची अहाँ कहिया आएब कहिया नै।

मोहन : संजू, आब अहाँ बड़ीटा भए गेलौं। बियाहमे कनिएटा रही।

संजू : अहाँक विचारसँ हम सभ दिन कनिएटा रही?

मोहन : हँ हँ सएह बुझु। नमहर भेलासँ अहुँकेँ दीदी जकाँ बियाह करए पड़त। बाप-माएकेँ बड़ड खरचा करए पड़त। तैयो बाप-माएकेँ छोड़ि परघर चलि जाएब। नै तँ हमरे लग सभ दिन रहि जाउ ने संजू।

संजू : एगोमे सुखए कऽ संठी भए गेलौं आ दोसरकेँ राखैत छी। डाँरमे दम अछि पहिने? केहेन-केहेन गेल्ला तँ मोंछबला एल्ला। एक्के ठुस्सी मारब तँ मुँह भसकि कऽ पेटमे चलि जाएत।

मंजू : छोड़ू बुच्ची मजाक-तजाक। काल्हि अहाँ पाहुन संगे घुमै लए चलि जाएब।

पटाक्षेप

तेसर दृश्य

(स्थान- दीपक चौधरीक घर। दीपक खांसी करैत आ हकमैत बैसल छथि।)

दीपक : बड़का बेटा चिट्ठीक कोनो जबाबो नै पठेलनि। हमर आब कोनो ठेकान नै। कखन छी, कखन नै। बेमारी बड जोर केने जा रहल अछि।
(खांसी करैत-करैत बेदम भए जाइ छथि। फेर ओ बीड़ी पीबै छथि।)
सोचने रही जे मझिला बेटाक बियाह कए ली जीबतहि। मुदा हएत की नै, से कहब कठिन।

(प्रदीप कुमार ठाकुरक प्रवेश)

प्रदीप : दीपकबाबू, अहाँक हालत बड खराब देखै छी।

दीपक : (कलपि कऽ) सर परणाम।

प्रदीप : प्रणाम-प्रणाम।

दीपक : सर, हम सोचैत रही जे अपना जीबैत बेटा सभकेँ बियाहि ली। मुदा लगै अछि जे हएत नै।

प्रदीप : से किअए नै हएत? हिम्मत जुनि हारू।

दीपक : हिम्मत की हारब सर। अहु अवस्थामे लड़िकी लेल घुमैत-घुमैत, बौआइत-बौआइत, छिछिआइत-छिछिआइत नवका जूताक शोल खिआ गेल। जत्तऽ जाउ बेटे, जत्तऽ जाउ बेटे।

प्रदीप : हँ, ई तँ बड़का समस्या अछि। लड़िका तँ लड़िकासँ बियाह नै करत आ लड़िकी भेटै नै अछि। दीपकबाबू, बुझैत छिऐ ई किअए भए रहल अछि? दहेज करणे। दहेज दुनियाक संतुलनकेँ बिगारि देलक आ बिगारि देत। जुग अल्ट्रासाउण्डक भए गेलैए। लोक अल्ट्रासाउण्ड करा कऽ बेटीकेँ जेना-तेना नष्ट कऽ दैत छथि। तहन बेटी वा लड़िकी कत्तसँ आएत? की लड़िकी बरखामे खसत?

दीपक : सर, हमहुँ ओइ अल्ट्रासाउण्डक मारल छी। कोनो लड़िकी अहाँक नजरिमे नै अछि।

प्रदीप : हँ यौ।

दीपक : जय भगवान, जय भगवती। कहु कत्त?

प्रदीप : (मन पाड़ैत) यौ बेलौकमे एक दिन कियो कहने रहथि जे एगो हमरा बियाहैवाली बेटी अछि। (नाक छुबैत) हँ हँ, आब मन पड़ि गेल। ओ छलाह- हरिश्चन्द्र चौधरी। हुनका एक्केटा बेटीए छन्हि, बेटा-तेटा नै।

दीपक : सर, तहन जल्दी बुझियौ ने। सर, तहन तँ ओ माल-पानी बढ़िया खरच करताह।

प्रदीप : अहाँ बड लोभी छी। सदिखन माल-पानीक जोगारमे रहैत छी। पहिने हमरा बुझऽ दिअ जे लड़िकी छन्हिँ वा उठि गेलीह। अच्छा रूकु, हम घर जाकऽ झामलाल महतोकेँ हुनका ओइठाम पठबै छी। हँ की नै, से हुनके दिया समाद पठा दै छी। अहाँ असथिर रहु।

(प्रदीपक प्रस्थान। दीपक खूब खांसैत-खांसैत परेशान छथि।)

दीपक : बड़का बेटामे तँ सोलहन्नी ठकाए गेलौं। मुदा मझिलामे सुधि-मुरि ओसुलि लेब। आखिर एक्केटा बेटी छन्हि आ बेटा छन्हिं नै हुनका। हुनक सभटा संपत्ति हमरे हेबाक चाही।
(खांसैत-खांसैत परेशान)

(झामलालक प्रवेश)

झामलाल : दीपकबाबू, प्रदीप भैया हमरा हरिश्चन्द्रक ओइठाम लड़िकीक संबंधमे पठौने रहथि। हरिश्चन्द्रबाबूक एखन धरि कुमारिए छथि। मुदा हरिश्चन्द्रबाबूक मन बड़ड अगधाएल देखलियनि। पाँचटा कुटुमकेँ गप-सप्प करैत सेहो देखलियनि। ओ हमरा कहलनि जे हुनका जरूरी हेतनि तँ ओ हमरे ऐठाम आबि गप-सप्प करताह। हमरा भरिमे सएओ कुटुम आबै छथि। हमरा पानि छोड़ि कऽ किछु नै लगैत अछि। सभटा कुटुमे लेने आबै छथि।

दीपक : एहेन बात कहलनि ओ?

झामलाल : हँ यौ दीपकबाबू, हम अहाँकेँ फुसि किअए कहब? हमरा ओइसँ की फेदा? अन्तमे ओ कहलनि जे पियासल इनार लग जाइ अछि, इनार पियासल लग नै।

दीपक : हारल नटुआ झुटका बिछए। काल्हि हमरा लोकनि हुनका ओइठाम जाएब। नऽ छऽ केने आएब। कम्मो-सम्मोमे पटत तँ हमरा केनाइ परम आवश्यक अछि।

पटाक्षेप

चारिम चारिम

(स्थान- हरिश्चन्द्र चौधरीक घर। हरिश्चन्द्र चौधरी आ रमण कुमार दलानपर कुर्सीपर बैसि शालिनीक बयाहक संबंधमे गप-सप्प करै छथि। रमण कुमार हरिश्चन्द्रक मुखिया छथि।)

हरिश्चन्द्रक : मुखिया जी, शालिनीक बियाह हेतु लड़िकाबला सभ हमरा नाकोदम कए देने छथि। एखन धरि सैकड़ौ लड़िकाबला हमरा ऐठाम आबि कऽ गेलाह। मुदा हँ किनको नै कहलियनि।

रमण- हरिश्चन्द्र जी, सभ दिन होत न एक समाना। कोनो समए छल जइमे लड़ककीबला लड़िकाबलाकेँ खुशामद करै छलाह। मुदा आब एहेन समए आबि गेल अछि जइमे लड़िकाबला लड़िकीबलाकेँ खुशामद करै छथि। आ एखन किछु नै भेल। आगू देखब की-की होइ अछि?

(दीपक चाधरी, प्रदीप कुमार ठाकुर, सुरेश कामत, महेन्द्र पंडित आ झामलाल महतोक प्रवेश। हरिश्चन्द्र आ रमण ठाढ़ भऽ कऽ हिनका लोकनिकेँ बैसाबैत छथि। दुनू पक्षसँ नमस्कार पाती होइ छन्हि। सभ कियो बैस कऽ गप-सप्प करै छथि।)

रमण : (प्रदीपसँ) प्रदीपबाबू, कहु की हाल-चाल?

प्रदीप : सरस्वती माताक कृपासँ बड़-बढ़िया हाल-चाल अछि आओर अपनेक हाल-चाल?

रमण : सभ आनन्द अछि। प्रदीपबाबू, लड़िकाक बाप के छथि?

प्रदीप : (दीपक दिस इशारा करैत) ओ छथि, दीपक चौधरी।

दीपक : हम छी सरकार, नमस्कार।

रमण : नमस्कार, नमस्कार। दीपकबाबू, अहाँकँ लड़िकी पसीन छथि?

दीपक : हँ, हम एगो विश्वसनीय सूत्रसँ बुझि लड़िकीसँ संतुष्ट छी।

रमण : हरिशचन्द्रजी, अपनेकँ लड़िका पसीन छथि?

हरिश्चन्द्र: हँ, हमरो बेलॉकमे प्रदीपेबाबू कहने छलाह जे दीपकबाबूक लड़िका बड नीक छथि। हम हिनकेपर पूर्ण विश्वास राखि लड़िकाकँ बड नीक मानलौं।

रमण : यानी दुनू तरफसँ लड़िका-लड़िकी पसीन छथि। तहन दीपकबाबू, बाजू केना की बियाह-दान करब। बेचारा हरिश्चन्द्र बड गरीब छथि। कौहना कऽ ई बेटीकँ पढ़ौलनि।

सुरेश : तैयो किछु बजताह ने हरिश्चनद्रबाबू जे की केना खरच करब?

हरिश्चन्द्र : हम किछु नै बाजब। बजताह मुखिए जी। हमरा संबंधमे हुनका सभ किछु बुझल छन्हि।

रमण : हरिश्चन्द्रबाबू खरच करताह। जदी अपने लोकनि ई बुझि कऽ आएल छी तहन अपने सभकँ ई गरीबक कुटमैती नै भेल। दीपकबाबू, अपन बेटाक बियाहमे की केना खरच करताह से बाजथु।

सुरेश: दीपकबाबू की बजताह? ओ तँ अपने सबहक सवाल सुनि दंग छथि।

महेन्द्र : यौ सुरेशबाबू, हरिश्चन्द्रबाबू छिरहारा खेलाइ छथि। डुबि कऽ पानि पीबै छथि।

हरिश्चन्द्र: हरिश्चन्द्र बाबू डुबि कऽ पानि की पीताह? रहए तँ छपाइ नै, नै रहए तँ बिकाइ नै।

महेन्द्र : नै रहए तँ बेटी बियाहै लेल किएक चललौं।

झामलाल : महेन्द्रबाबू ठीक कहै छथि। बेटीक बियाह टिटकारीसँ नै होइ अछि। डाँर मजगूत चाही।

हरिश्चन्द्र: जदी अहींक डाँर मजगूत अछि तँ बेटा बियाहि लिअ आनठाम। (बिगरि कऽ)

प्रदीप : अपने सभ शांत रहु। हल्ला-गुल्ला जुनि करू। मुखियाजी, अपने किछु सकारात्मक बात बाजू।

रमण : हमरा समएक बड अभाव अछि। हम एक बेर बाजि दै छी- जदी दीपकबाबू गोटेक लाख टाका खरच करताह तहन ई लड़की हिनका होतनि। नै तँ असंभव। ऐ अल्ट्रासाउण्डक जुगमे बेटीक बड बेसी अभाव अछि आ बेटाक कोनो अभाव नै अछि।

प्रदीप : मुखियाजी, हमरा लोकनि एक मिनटमे विचारि कऽ कहि दै छी।

(प्रदीप, दीपक आ सुरेश अन्दर जा कऽ गप-सप्प करै छथि।)

सुरेश : आब ओ जमाना नै रहि गेल जइमे बेटीबलाकेँ बेटाबला दहेजमे कुहरा दइ छलाह। अल्ट्रासाउण्डक जुगमे बेटीक बड अभाव भऽ गेल अछि

आओर बेटाबलाकेँ बियाहनाइ मजबूरी अछि। तँ भागीन, हरिश्चन्द्रबाबू कमसँ कम एकाबन हजार टाका तोरासँ लेबे करथुन।

प्रदीप : दीपकबाबू, मामाश्री ठीके कहै छथि। एकाबनमे ई कुटमैती फाइनल कऽ लिअ।

दीपक : सर, अपने सभ जे जेना कहबै से हमरा मान्य हएत। चलु फाइनल कऽ लिअ।

(प्रदीप, दीपक आ सुरेशक प्रवेश।)

रमण : बाजल जाउ प्रदीपबाबू, की केना विचार भेलै?

प्रदीप : दीपकबाबूक स्थिति ओते बढ़ियाँ नै अछि। ओ मात्र अहाँकेँ एकतीस हजार टाका देताह।

रमण : तहन ई कुटमैती अपने सभकेँ नै भेल। जदी एकावन हजार टाका अपने सभ दऽ सकबनि तहन कुटमैती हएत, नै तँ जय रामजी की।

सुरेश : बेस हमरा लोकनि मानि लेलौं।

रमण : मानि लेलौं तँ एखन लड़िकीकेँ किछु चढेबैक की बादमे?

सुरेश : बियाहेमे चढ़ए लेब।

रमण : दीपकबाबू, बात पक्का।

दीपक : हँ यौ मुखियाजी पक्का नै तँ कच्चा।

रमण : प्रदीपबाबू गाइरेन्टर अहींक होमए पड़त।

प्रदीप : बेस, हम तँ छिहे।

रमण : तहन हरिश्चन्द्रबाबू, चाह-पान-नश्ताक ओरिआन जल्दी करू।

(हरिश्चन्द्र अन्दरसँ चाह-पान-नश्ता अनए छथि। सभ कियो नश्ता, चाह, पान करै छथि। फेर हाथ मुँह धोइ कऽ सभ कियो अंतिम गप-सप्प करै छथि।)

वियाह कहिया करब दीपकबाबू?

दीपक : जल्दीए राखू। फेर टकोक इन्तजाम करए पड़त ने? दू-चारि दिनमे राखु। आब मुखियाजी चलबाक आज्ञा देल जाउ।

रमण : किएक, समधीन अहाँक प्रतीक्षा करैत हेतीह?

दीपक : ओ हमरा सनक हजारोकेँ प्रतिदिन प्रतीक्षा करै छथिन। तहन जय रामजी की, मुखियाजी।

रमण : जय रामजी की।

(प्रदीप, सुरेश आ दीपकक प्रस्थान नमस्कार-पातीक पश्चात)

पटाक्षेप

पाँचिम दृश्य

(स्थान- हरिश्चन्द्र चौधरीक घर। शालिनीक बियाहक पूर्ण तैयारी अछि। जयमालाक मंच सजल अछि। मंचपर बाल्टीनमे जल-लोटा राखल अछि। हरिश्चन्द्रक भाए सुरेन्द्र चौधरी असगरे कुरसीपर बैसि कऽ ओङहाइत छथि आ खैनी खा कऽ छीकैत छथि। मुँहसँ खैनी निकलि जाइ अछि। फेर खैनी खा कऽ नोइस लऽ छीकैत छथि।)

महेन्द्र : आ ऽ ऽ ऽ छी। धूर सार खैनी। बड़ खच्चर छैँ। बाप लागल छौ। आ ऽ ऽ ऽ छीं। कोन खैनी अछि कोन नै। शायद बापक जनमल खैनी नै अछि, मएक जनमल अछि। आऽ ऽ ऽ छीं। हमरा किएक तङ करै छैँ, बौहकैँ कर गे। एखनहि हमर मुँह नानीए दादीएकैँ उकटि देतौ। आऽ ऽ ऽ छीं। बुझि पड़ै अछि बरियाती दुआरे एना करै छैँ। सार खैनी नहितन। बापक बियाह पितीयाक सगाइ देखेबौ। आऽ ऽ ऽ छीं। लागि रहल अछि जे लड़िकाक माए चलितर बुढवाक संग उरहैर गेल। हम तेरा खेबौ नै सार। मुदा नै खेबौ तँ तों कानबें तहन। आऽ ऽ ऽ छीं। खैनीक पितियाइन नहितन। माएसँ बियाह कऽ लेबौ। नै तँ अपन चालि छोड। आऽ ऽ ऽ छीं। सार खैनी मुँहे दाबि देबौ आ गरदनिमे फँसरी लगाए देबौ। मरलें तँ नाँड़ साथी, जीलें तँ नाँड़ साथी। आऽ ऽ ऽ ऽ छीं। हे हे गोर लगै छियौ सार। पएर पकड़ै छियौ सार। आब एना नै करिहैँ। बेज्जैत भए जाएब। बरयाती आबैत हएत। आऽ ऽ ऽ छीं। हे हे, एक्के बेर छियौ ने। अन्तिमे ने। हे हे, एकटा पौआ देबौ आइ। गांजा देबौ। लुडिया मिरचाइ देबौ। इज्जत बचाह। प्रतिष्ठा राख। तोरा बगैर हम नै रहि सकै छी। हे सार खैनी, तोरा बगैर हमर कनियां एक्को क्षण नै रहि सकै छथि। हँ, आब सार मानलक। कतेक कौबला-पाती केलाक बाद। सार खैनी बड बुधियार अछि। मुदा बापसँ भैँट आइ भेलै।

(भटक्का फोड़ै करैत छथि बरयाती सभ अन्दरमे। ई अबाज सुनि महेन्द्र तीन-तीन हाथ छरपैत छथि। डरसँ कोने-कोन नुकाइत छथि। बाप रौ, माए गै करै छथि। बाल्टीन माथपर राखै छथि। ऐ तरहेँ बरियातीक प्रवेश होइ छन्हि। सभकेँ बाप रौ, माए गै करैत पएर छुबि प्रणाम करै छथि। बरयातीमे छथिन- दीपक चौधरी, प्रदीप कुमार ठाकुर, झाामलाल महतो, सुरेश चौधरी, सोहन चौधरी, मोहन चौधरी आओर गोपल चौधरी। चाह-पान-नाश्ता बाद शीघ्र जयमालाक तैयारी होइत अछि।)

सुरेश : (सुरेन्द्रसँ) सरकार, जय माला शीघ्र करू।

महेन्द्र : सरकार, हम सरकार नै छी। सरकार सभ अन्दर छथि।

मोहन : सरकार सभकेँ बजाए अनियौन।

सुरेन्द्र : बेस, बजाए अनैत छियनि। (अन्दर जा कऽ आबि।)

सभ कियो आबि रहला अछि।

(हरिश्चन्द्र चौधरी आ रमण कुमारक प्रवेश। दुनू पक्षसँ नमस्कार पाती भेलनि।)

मोहन : (मुखियाजी सँ) मुखियाजी, जयमालामे किअए बिलंब भए रहल अछि?

रमण : हमरा लोकनिक कोनो बिलंब नै। अहीं सभकेँ बिलंब अछि।

मोहन : की बिलंब?

रमण : यएह जे दीपकबाबू एखन धरि एकावन हजार टाका हरिश्चन्द्रबाबूकेँ नै देलखिन।

दीपक : यएह लिअ एकावन हजार टाका।

(प्रदीप दीपकसँ एकावन हजार टाका गिनि कऽ मुखियाजीक हाथमे दऽ दै छथिन।)

रमण : हँ, आब वादा पूर्ण भेल। आब जयमाला अतिशीघ्र होएत।

(हरिश्चन्द्र आ रमण अंदर जाइ अछि। पुनः अन्दरसँ जनानी सभ जय-माला कराबए अबै छथि। समूहमे शालिनी कुमारी, राधा देवी आओर चारि-पाँचटा अन्य जनानी छथि। ओ सभ परिछन कऽ जय-माला करौलनि। शालिनी, सोहनकेँ पएर छुबि प्रणाम केलनि। सभ जनानी अन्दर जाइ छथि। तहन सुरेन्द्र चौधरीक प्रवेश।)

सुरेन्द्र : बरयाती सभ, आऽ ऽ ऽ छीं। (खैनी खा कऽ) सार फेरो आबि गेल। सार निरलज आऽ ऽ ऽ छीं। पतित आऽ ऽ छीं। हे सार, कुटुम सभ हँसैत हएत। हे सार प्रतिष्ठा आऽ ऽ ऽ छीं। बचा बचा आऽ ऽ ऽ छीं। हे हे गोर लागऽ दै छियौ। हे हे आइ राति नवकी समधीन लग लऽ जेबौ। बात मान। (छींक रूकि जाइ अछि।) हँ सार, समधीनक लोभमे बात मानलक। बरियाती सभ भोजन सराए रहल अछि। चलै चलू भोजनमे।

(सबहक प्रस्थान)

पटाक्षेप

छठम दृश्य

(स्थान- दीपक चौधरीक घर। दीपक चौधरी दलानपर मन मारने माथपर हाथ लऽ कऽ बैसल छथि। खोंखी करैत-करैत बेदम भऽ जाइ छथि। बड़ हकमै छथि। बगलमे सुपेन राखल छौरपर कफ फेंकै छथि।)

दीपक : हे भगवान! हे भगवती! हे सरस्वती महरानी! आब हमरा ऐ दुनियासँ लऽ चलु।
(खोंखी करैत) बेमारी हमर चरम सीमापर पहुँचि गेल अछि। कियो देखनिहार नै अछि। जै बेटाले अपन परम पियारीक जान गमेलौं। ओ बेटा कोनो काज जोकर नै। सात बेटा रामके एक्कोगो नै कामकेँ। (खोंखी करैत-करैत बेदम भऽ जाइ छथि। सुरेश कामतक प्रवेश)

सुरेश : भागिन बड़ तबाह देख रहल छी।

दीपक : हँ मामा। एक तँ बेमारी चरम सीमापर अछि आओर दोसर बियाहक कर्जा माथपर अछि।

सुरेश : बेटा सभ किछु नै सम्हरैत छथुन?

दीपक : सभ अपना लेल हरान छथि। सभ भाग-बिलासमे लागल छथि। बेटा लेल सभटा कमाएल, धरल-उसारल अल्ट्रासाउण्डमे आ पत्नीक दवाइमे बुकि देलौं। सेहो पानिमे चलि गेल।

(खोंखी करैत-करैत बेदम भऽ जाइ छथि।)

सुरेश : भागिन, अहाँक स्थिति आब बड़ खराब देख रहल छी। आब जीता-जिनगीमे छोटका बेटाक वियाह कतौ जल्दी कऽ लिअ। करजा-

बरजा सधबे करत। बेटा सभकेँ सबहक करजा कहि दियौन। ओ सभ जेना-तेना, बेचो-बिकिन कऽ करजा अदाएँ करत।

दीपक : हमहुँ बैस कऽ सएह झखैत छी। कोनो लड़िकीक सुर-पता अछि अहाँकेँ? कअए गोटेकेँ कहलियनि। मुदा सभ कहैत छथि जे आब बेटी कत्त? सभ बेटीकेँ लोक अल्ट्रासाउण्ड कराए-कराए कऽ भगवानपुर पठाए देलखिन। आब बेटाक बियाह बड़ मुश्किल अछि बड़ मुश्किल। हमरा सभटा दहेजक लोभ घुसरि रहल अछि। ऐसँ चिक्कन हमरा भगवान मौतहि दऽ दैतथि।

सुरेश : भागीन हरबड़ाउ नै। भगवानपर भरोसा राखू। भगवानक घर देर अछि अंधेर नै। लड़िकीक तँ बड़ अभाव ठीके अछि। ऐ परोपट्टामे एक्केटा लड़िकी अछि।

दीपक : मामाश्री, ओ किनक बेटी छथिन?

सुरेश : ओ छथिन बलवीर चौधरी। अहाँक समधिक छोटकी बेटी। तैपर भरि दिनमे हजारो लड़िकाबला अबै-जाइ छथि। बड़की पुतौहवाला गप्प नै बुझियौ। मझिलीयोसँ भरिगर बुझाएत अहाँकेँ। बड़ करगर फीस छन्हि बलवीर चौधरीक?

दीपक : कत्ते लगभग?

सुरेश : बलवीर चौधरीकेँ कमसँ कम पाँच लाख टाका नगद आओर सभ श्रमजान चाही लड़िकी-लड़िकाक मनोरथ वास्ते।

(सुनिते दीपककेँ चौन्ह आबि जाइ छन्हि। सुरेश गमछासँ हौंकि कऽ शांत करै छथि। सुरेश अन्दरसँ पानि आनि कऽ दीपककेँ मुँह-हाथ धोइले दैत छथिन। दीपक कुर्रा कऽ मुँह-हाथ धोइ फेर मामाश्रीसँ गप्प करैत छथि।)

दीपक : मामाश्री, समधि एतेक पैघ धराह बनि गेलाह मास्टर भऽ कऽ?

सुरेश : भागिन, समए बलवान होइ छै। एक दिन गाड़ीपर नाह तँ एक दिन नाहेपर गाड़ी। सदा साहिबी किनको रहलैए? कहबी अछि सभ दिन होत न एक समाना।

दीपक : मामाश्री, समधि हमरो किछु कम करताह की नै?

सुरेश : आखिर ओ अहाँक समधि छथि। किछु कम अवस्य करबाक चाही।

दीपक : तहन चलू मामाश्री काल्हि। जदी पटि-सटि गेल तहन छोटको बेटाकेँ कऽ लेब। हमरा मूइला बाद हमरा बेटाकेँ बियाह के करौताह? दर-दियाद केकरा के होइ छै?

सुरेश : भागिन, काल्हि भोरे समधि ओइठाम चलू। काल्हि धरि लड़किकेँ कोनो फैनल नै भेल छल, से हमरा पूर्ण पता अछि।

दीपक : सबेरे जाएब तहन ने काज बनत। नै तँ समधि किनको जुबान दऽ देलखिन तहन भेल आफद।

सुरेश : भागिन, काल्हि भोरसँ भोर अहाँ हमरा ऐठाम चलि आएब। हम चलैत छी।

(दीपक सुरेशकेँ पएर छुबि प्रणाम करै छथि। सुरेशक प्रस्थान)

दीपक : (खोंखी करैत-करैत बेदम भऽ जाइ छथि।) लागि रहल अछि जे ई बियाह हम देखब की नै। आगू माँ सरस्वतीक किरपा।

पटाक्षेप

सातम दृश्य

(स्थान- सुरेश कामतक घर। भोरहि भोर दीपक चौधरी मामाश्री ओइठाम पहुँचलाह।)

दीपक : मामा, मामा, यौ मामा, मामा यौ।

सुरेश : (अन्दरसँ) हँ भागिन, यएह एलौं। शीघ्र आबि रहलौं अछि। (किछु बिलंब भए जाइत छन्हि सुरेशकँ। तहन दीपक अन्दर जा कऽ।)

दीपक : मामी, मामी, अहाँ मामाकँ जल्दी किएक नै छोड़ै छिऐ? ओतेक कसि कऽ पकड़नाइ होइ छै? आउ मामा, जल्दी आउ। हम दलानपर छी।

सुरेश : चलू बैसू तुरन्त एलौं।
(दीपक दलानपर बैसल छथि। किछुए काल बाद सुरेशक प्रवेश)
चलू भागिन, बड़ बिलंब भए गेल।

(दीपक आ सुरेश बलवीरक ओइठाम जा रहला अछि। किछु देरमे बलवीर चौधरीक ओइठाम दुनू गोटे पहुँचि कऽ दलानपर बैसलाह।)

सुरेश : घरवारी छी। यौ घरवारी। घरवारी।

दीपक : छोड़ि दियौन मामाश्री समधिकँ। ओ अखन समधीन लग हेथिन।

बलवीर : (अन्दरसँ) समधीन लग छेलौं ठीके मुदा आब नै छी। एक क्षणमे आबि रहल छी।
(दूटा लोटामे पानि लऽ कऽ बलवीरक प्रवेश। सभ कियो आपसमे नमस्कार-पाती करै छथि। पएर-हाथ धोइ कऽ सुरेश आ दीपक कुरसीपर बैसै छथि।)

सुरेश : बलवीरबाबू, हमरा लोकनि किछु उद्देश्यसँ आएल छी। ओइ उद्देश्यक पूर्ति अहींक हाथमे अछि।

बलवीर : बाजल जाउ, की उद्देश्य अछि अपने सभकेँ।

सुरेश : यएह जे अपन छोटकी बुच्चीक वियाह दीपकबाबूक छोटका बेटासँ करू। बेचारा समधि अस्वस्थ रहैत छथि। अपन जीता-जिनगी ओ छोटका बेटाकेँ सेहो निमाहि देमए चाहै छथि। हिनका लड़िकी नै भेट रहल छन्हि। हारि कऽ ओ ऐ उद्देश्यसँ अपनेक दुआरिपर एलाह अछि।

बलवीर : समधि, उद्देश्य किनको खराब नै होइ छै। मुदा संबंधीमे कुटमैती नीक नै होइ अछि।

दीपक : समधि, अपनेक ई कथन बिल्कुल ठीक अछि। मुदा मजबूरीक नाम महात्मा गाँधी छिऐक।

बलवीर : अहाँक मजबूरीसँ हमरा की मतलब अछि। तैयो समधि बाजू, बेटाक बियाहमे अपने की केना खरच-बरच करब। आब सेबकाहा जमाना नै रहि गेल अछि।

सुरेश : समधि की खरच करताह? किछु नै। सिरिफ बेटा देताह, लड़िका देताह। आओर हिनका लग किछु छन्हिहेँ नै।

बलवीर : समधि, टिटकारीसँ दही केना जनमत?

सुरेश : बलवीरबाबू बाजू, अपनेक लड़िकी हेतु समधिकेँ की सेवा करए पड़त?

बलवीर : समधि छथि तँ की कहबनि, जाउ अढ़ाइए लाख नगद दऽ देबनि अलावे लड़िका-लड़िकीक सभ सनोमान।

(सुनितहि दीपक अचेत भऽ जाइत छथि। बलवीर अन्दरसँ बेना आनि कऽ सुरेशकेँ दै छथि। सुरेश हुनका बेना हौंकैत छन्हि। दीपक होशमे नै अबै छथि। फेर बलवीर लोटामे पानि आनै छथि। अपनेसँ हुनका बलवीर मुँह पोछि दै छथिन। दीपक होशमे आबि नीक जकाँ बैसै छथि।)

समधि, एना किअए भए गेल?

दीपक : से नै कहि। ओना ऐ बीचिमे अस्वस्थ रहि रहलौं अछि। हम अपनेसँ कल जोड़ि आग्रह करै छी जे अपन बेटी हमरा बेटा हेतु दए दिअ। हम सभ तरहेँ मजबूर छी।

बलवीर : ओइ बेटीपर मरूकियाबला चारि लाख एकावन हजार टाका नगद आओर सभ श्रमजान दए गेलाह। मुदा हम पाँच लाखसँ कम नै केलियनि। खाइर हमर समधि छी आ बड़ मजबूर सेहो छी। तँए सबा लाख टाका नगद आ लड़िकी-लड़िकाक वास्ते परमावश्यक सभ चीज-बौस। तहने ई कुटमैती संभव अछि। नै तँ जय रामजी की। ऐसँ कम हम अपना बापोकेँ नै करबनि। स्वीकार अछि तँ बाजू नै तँ कुटुमक नाते, समधिक नाते भोजन साजन करू आ चुपचाप बैस आराम करू।

दीपक : समधि, हमरा स्वीकार अछि। तहन बाजू, नगद कहिया लेब आ केना लेब।

बलवीर : समधि, अहींक सुविधा।

दीपक : बरयाती लऽ कऽ आएब, तहने गिनि देब।

बलवीर : बरयाती लऽ कऽ अहाँ आएब? नै नै। हमहीं आएब। तखनै हमरा नगद गिन देब।

सुरेश : से केना हएत? लड़िकाबला हम आ बरयाती लऽ कऽ आएब अहाँ? लोक की कहतथि?

बलवीर : लोक की कहतथि? समए बलवान होइ छै। सभ दिन लकीरक फकीर बनलासँ काज नै चलैबला अछि। जखैन जेहेन हवा बहए तखैन ओहने पीठि ओरबाक चाही। समधि, ई सुनि लिअ जे बरयाती लऽ कऽ हमहीं आएब, हमहीं आएब। नै तँ कुटमैती नै हएत।

सुरेश : जाउ अपनेक जे विचार।

बलवीर : हँ हँ, बरयाती साजि कऽ हमहीं आएब। समधि, मंजूर अछि वा नै?

दीपक : नै मंजूर केने कोनो गुंजाइश नै। मंजूर करहि पड़त।

बलवीर : से जे बुझी आ जेना बुझी। बरयाती हम परसुए आबि रहल छी। परसु अन्तिमे लगन अछि।

दीपक : जेना पदाउ समधि, पादहि पड़त। खाइर जय रामजी की। आब जेबाक आज्ञा देल जाउ।

बलवीर : आब जेबाक बेर नै रहि गेल अछि। भोजन-साजन करू आ विश्राम करू।

दीपक : नै समधि, बियाहक ओरियान केनाइ अछि। दिन साफे नै अछि। हम जाइ छी। जय रामजी की।

(नमस्कार-पातीक पश्चात् दीपक आ सुरेशक प्रस्थान करैत।)

पटाक्षेप

आठम दृश्य

(स्थान- दीपक चौधरीक आवास। गोपालक वियाहक तैयारी पूर्ण भए गेल अछि। जयामालाक मंच सजल-धजल अछि। दीपक आओर प्रदीप जयमाला-मंचक लगमे राखल कुर्सीपर बैस कऽ गप-सप्प करै छथि।)

प्रदीप : दीपकबाबू, सुनलौं अनरीतक रीत। ठीके गप छी की?

दीपक : बिल्कूल ठीक अछि। हम की कए सकै छलौं? मनुष्य परिस्थितिक दास अछि।

प्रदीप : हँ, ई बात तँ सदा सत्य अछि जे समए किनको नै छोड़लक आ नै छोड़त। खाइर होनीकेँ कियो नै रोकि सकै छै। दीपकबाबू, एखन धरि बलवीरबाबू बरयाती लऽ कऽ नै एलाह।

दीपक : अबिते हेताह। बेसी बिलंब करताह तहन बसियौरा खेताह।

(बैंड पार्टीक आवाज सुनि)
प्रदीपबाबू, बरआती आबि रहल अिछ। ऐ बीच हम नश्ता-पानि सरिया लै छी।

प्रदीप : बेस जाउ। जल्दी करू।

(दीपक प्रस्थान करै छथि। बलवीरक प्रवेश बरियातीक संग। बरआतीमे संजू, गंगाराम, चन्देश्वर आ हरेराम छथिन। सभ बरियाती कुर्सीपर बैसैत छथि। मोहन आ सोहन बरियातीकेँ नश्ता-चाह-पान करबै छथि। लड़िका गोपालक दीपक, सुरेश, झामलाल, महेन्द्र

इत्यादि जयमाला कराबए अबै छथि। लड़िकीकेँ चुमा कऽ जयमालाक जोगार करै छथि।)

बलवीर : दीपकबाबू, बस करू। ऐसँ आगू जुनि बढ़ू (बिगैर कऽ) (सभ रूकि जाइ छथि।)

प्रदीप : किअए नै बिगरब? नगद गिनलथि दीपकबाबू। सवा लाख टाका अखन गिनथु तहन जयमाला करताह।

प्रदीप : दीपकबाबू, पहिने बलवीरबाबूकेँ नगद गिनु तहन जयमाला करब।

(जयमाला छोड़ि दीपक अन्दरसँ सवालाख टाका आनि बलवीरबाबूकेँ गिनि कऽ दै छथिन। बलवीर रूपैआ लऽ कऽ प्रसन्न छथि।)

बलवीर : हँ, आब अपने सभ जयमाला करू।

(सभ कियो जयमाला करबै छथि। पहिने लड़िका लड़िकीकेँ जयमाला पहिरौलनि। जोरदार तालीक गदगड़ाहटि भेल। तकर बाद लड़िकी लड़िकाकेँ जयमाला पहिरौलनि। तालीक बौछार भेल। लड़िकीबला बिस्कुट चकलेट लुटेलनि। लड़िका-लड़िकी मंचपर बैसल छथि। वातावरण बिल्कुल शांत अछि।)

समधि, घरपर पार्टीक व्यवस्था पूर्ण भए गेल अछि। यथाशीघ्र हमरा लोकनिक विदाइ कऽ दिअ। हमरा लोकनिक नियम अछि जे लड़िका-लड़िकीक घर जएताह। फेर एक सप्ताह बाद लड़िका-लड़िकी अहाँक घर आबि स्थायी रूपसँ रहतथि।

हरेराम : दीपकबाबू, जल्दी समधी-मिलन कए लिअ।

दीपक : सरकार, जे जेना विचार।

हरेराम : बलवीरबाबू, जल्दी समधी-मिलन करू।

(बलवीर आ दीपक गरदनि मिलि कऽ समधी मिलन केलनि। समधी मिलनमे बलवीर दीपककेँ पच्चीस हजार टाका दै छथिन। बरियातीक संग लड़िका-लड़िकीक प्रस्थान। आपसमे नमस्कार-पाती होइ छन्हि।)

पटाक्षेप

अंतिम दृश्य

(स्थान- दीपक चौधरीक आवास। दीपक चौधरी, मोहन चौधरी, मंजू, सोहन चौधरी व शालिनी मंचपर उपस्थित छथि। दीपकक हालत बड़ड गड़बड़ अछि। खोंखी करैत-करैत मरनासन भए जाइ छथि। अन्त कालमे दुनू बेटा-पुतौह हिनक सेवा-सत्कारमे लागल छथि।)

दीपक : आइ बुझाए रहल अछि जे हम स्वर्गमे छी। मुदा एहेन पहिने रहितए तँ हमरा चिन्ता नै खैताए। चिन्ते हमर बेमारीकेँ ओते बढ़ौलक। कहबी ठीके अछि- जे तुकपर नै से कथीदुनपर।

(खोंखी करैत-करैत बेदम भऽ जाइ छथि।)

मंजू : (मोहनसँ) स्वामी, बाबूजीक हालत बड़ खराब छन्हि। जल्दी डॉक्टरकेँ बजाउ।

मोहन : हम अपन बापक हमहीटा बेटा छी की? सोहनबाबूकेँ कहियनु, गोपालबाबूकेँ कहियनु।

शालिनी : (सोहनसँ) स्वामी, अहीं डॉक्टरकेँ देखियनु।

सोहन : अहीं देखियनु ने, बड़ दयालु छी तँ। हिस्सा लेताह सभ बराबर-बराबर आ डॉक्टरकेँ देखियौ हमहींटा।

दीपक : बुझलौं-बुझलौं। अहाँ दुनू भए केहन पितृभक्त छी? लोककेँ देखबैबला सेवा कए रहल छी जे हिस्सा कम नै भेटए। अहाँ दुनू भाँइसँ चिक्कन स्वभाव दुनू पुतौह जनीकेँ देख रहल छियनि। मोहन आ सोहन, आब हम नै बाँचब। कने छोटका बेटा आ पुतौहकेँ मुँह

देखाए दिअ।

मोहन : सोहन, कने गोपाल दुनू परानीकेँ बजाए आनहुन।

सोहन : भाइजी, हमरा देखल नै अछि। जदी अपने चलि जइतौं तहन बढ़िया रहितै।

मोहन : बौआ, हमरो नै देखल अछि गोपालक ससुरारि। ओना एक-दू दिनमे गोपाल दुनू परानीक अबैया अछिए। घबरेबाक कोनो काज नै।

(दीपक खोंखी करैत-करैत बड़ हकमि रहल छथि)

दीपक : आह! ओह!! आब नै बाँचब। छोटका बेटा पुतौहक मुँह शायद नै देख पाएब। आह! ओह!! आह!!

मोहन : बाबू, बाबू, अहाँकेँ की हएत की नै। कतौ किछु धएने-उसारने छी, से हमरा लोकनिकेँ बताए दिअ।

दीपक : बौआ सभ, धएल-उसारल तँ किछु नै छौ। मुदा तोरा सबहक बियाहक करजा हमरासँ अदाए कएल नै भेल। अहीं सभ अदाए कए देब। करजा हम महावीर मालिकसँ लेने छी। मुरि डेढ़ लाख अछि आ सूदिक दर पाँच प्रतिशत मासिक अछि। वएह करजा हमरा जान लाए रहल अछि। अहाँ सभ करजा सधेनाइ नै बिसरब। हमर सेवा अहाँ सभ करी वा नै।

मोहन : अहाँ पागल कुकुर छी। अहाँक सेवा केनाइ धोर पाप अछि। हमरा सबहक कप्पारपर बड़का बोझ लादि कऽ मरि रहल छी।

मंजु : स्वामी, एना बेहोश नै होउ।

मोहन: ऐ छोंकरी, होशमे तों रह। गूड़क मारि धोकरा जानत की तों जानबँ।

सोहन : भैया ठीक कहै छथि एहेन बापकँ।

शालिनी : स्वामी, अहुँ सएह निकललौं बुधियार।

सोहन : ऐ बुधियार बापक बेटी, अखन मारैत-मारैत बुढ़बे संग विदा कए देबौ।

शालिनी : हँ हँ, किएक नै। अहाँ सनक बुधियारपर कोन भरोस? जे बाबाजी बापकँ नै देखलनि।

दीपक : (खोंखी कऽ) अहाँ सभ एना किअए करै जाइ छी। किनको मानवता नै अछि। हमरा अहाँ सभ पागल कुकुर कहै छी। अहुँ सभकँ एक दिन एहेन आएत जइमे अहुँ सभ सुगर भए सकै छी। बेटा सबहक खातिर हम की की नै केलौं आ से बेटा आइ हमरा पागल कुकुर कहै छथि। बेटा सबहक खातिर हम कतेको बेटीकँ नाश कए देलौं जे बेटा सबहक संपतिमे कोनो घटबी नै होइ।

मोहन : अहाँ ठीके कुक्कुर छी। कुकर्मक फल भोगै पड़त। बबाजी बनलासँ किछु नै हएत। अहाँ लोभी कुक्कुर छी।

दीपक : हँ हँ, जरि-मरि कऽ तोरा सभकँ एत्तेटा कए देलियौ, तेकरे फल हमरा भेटै अछि।
(खोंखी करैत-करैत बेदम छथि। दुनू पुतौह लगमे बैसल छथि आ दुनू बेटा दूरमे बैसल छथि।)

आह! आब नै बाँचब। ओह! हे भगवान, आब लऽ चलू। आह! ओहो! आह! आह!
(प्रदीपक प्रवेश)

प्रदीप : दीपकबाबू, की भए रहल अछि?

दीपक : आब नै पुछु सर। आब ऐ दुनियासँ जाए दिअ।

प्रदीप : किएक, बेटा सभ इलाज नै करौलनि की?

दीपक : ओ सभ हमर इलाज की करौताह? इलाजक बदला हमरा पागल कुक्कुर, लोभी कहै छथि। कहलियनि छोटका बेटा-पुतौहक मुँह देखए दे, सेहो नै। प्रदीपबाबू, अहाँकेँ मोबाइलमे बलवीरबाबूक नम्बर अछि की?

प्रदीप : हँ अछि। हँ कहि दै छियनि जे जदी अहाँकेँ समधिक मुँह देखबाक अछि तँ जल्दी आउ। आ बेटी-दमादकेँ सेहो लेने आउ।

(प्रदीप आ बलवीर मोबाइलसँ गप करै छथि। किछु देर बाद बलवीर गोपाल आ संजूक प्रवेश।)

बलवीर : की भए गेल समधि?

दीपक : आह! ओह! आब हम जए रहल छी। हमरासँ जे किछु गलती भेल हुअए तकरा माफ करब।

गोपाल : बाबूजी, हम कने डॉक्टरकेँ बजौने अबै छी।

दीपक : आब नै बेटा, बेकारमे पाय पानिमे चलि जाएत।

संजु : बाबूजी, जए दियौन। जे होनी हेतै से हएत। अपन कर्त्तव्य करबाक चाही।

दीपक : बेस जाउ गोपाल। मुदा फेदा नै हएत।

(गोपाल डाक्टर प्रेमनाथ मेहताकेँ अनै छथि। डाक्टर आला लगा कऽ चेक करै छथि। आँखिमे टॉर्च बारि कऽ देखै छथि।)

प्रेमनाथ : अहाँक पेसेन्ट सम्हरैबला नै अछि। हिनका अहाँ सभ आगू लऽ जाउ।

गोपाल : से हम आगूक व्यवस्था कए रहल छी। तत्काल अपनेसँ जे किछु बनि पड़ाए से करियौ।

प्रेमनाथ : बेस, हम कोशिश करै छी।

(प्रेमनाथ पानिक बोतल टाङैत छथि। बोतलमे सूइया-दवाइ दऽ कऽ पानि चढ़बै छथि।)

दीपक : (कछमछाइत) आह! ओह! आह! बौआ सभ।

प्रदीप : गोपाल, बाबूजी किछु कहै छथि।

गोपाल : जी बाबू जी,

दीपक : बौआ, तोहर माएक बेमारीबला आ तोरे सबहक वियाहक करजा डेढ़ लाख मूइर महावीर मालिककेँ छन्हि, से अवस्स तीनू भाँइ सधाए देबनि आओर दहेज हेतु बेटाक लोभमे नै पड़ब। बेटी-बेटासँ कम नै होइ अछि। बेटा आ बेटी ऐ दुनियाँमे नै रहत तँ दुनियाँक संतुलन

बिगरि जाएत। गर्भपातसँ पैघ कोनो पाप नै अछि। (बेटीक अपमान नै हेबाक चाही)- 3

(तीन बेर कहि दीपक दम तोड़ि दै छथिन।)

प्रेमनाथ : आइ एम सॉरी। बेचारा चलि गेलाह दुनियासँ।

(सभ कियो कानि रहल छथि। प्रेमनाथ आ प्रदीपक प्रस्थान। पर्दा गिरै अछि। अन्दरसँ राम नाम सत्यक आवाज जोरसँ भए रहल अछि।)

इति शुभम्

२

छीनरदेवी

पुरुष पात्र

1. सुभाष ठाकुर- एकटा साधारण शिक्षित व्यक्ति।
2. ललन ठाकुर- सुभाष ठाकुरक इकलौता पुत्र।
3. पवन- सुभाष ठाकुरक भातिज।
4. मटुक- सुभाष ठाकुरक पड़ोसी।
5. राजू- सुभाष ठाकुरक वुजुर्ग पड़ोसी।
6. संजय- सुभाष ठाकुरक भागिन।
7. सुखल कियोट- एकटा साधारण भगत।
8. यदुलाल ठाकुर- सुभाष ठाकुरक छोट भाए।
9. सोमन ठाकुर- यदुलाल ठाकुरक इकलौता बेटा।
10. परबतिया कोइर- एकटा प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक।
11. घटकराज ठाकुर- सुभाष ठाकुरक पीसा।
12. बलदेव महतो- एकटा साधारण किसान।

13. विनोद झा- काली मंदिरक पुजारी।

स्त्री पात्र-

1. मीरा देवी- सुभाष ठाकुरक पत्नी।

2. सुकनी देवी -यदुलाल ठाकुरक पत्नी।

3. मालती देवी- बलदेव महतोक पत्नी।

4. अनु अंजना- बलदेव महतोक इकलौती बेटी।

पहिल दृश्य

(स्थान- सुभाष ठाकुरक घर। मीरा देवी सुभाष ठाकुरक पत्नी छथिन। ललन ठाकुर हिनक इकलौता बेटा छथिन। ललन बताह अवस्थामे अपन दरवाजापर अंट-संट करै छथि। हिनक उपद्रवकेँ देख सुभाष आ मीरा मनहुस अवस्थामे किछु गप-सप्प करै छथि।)

मीरा- स्वामी, ई छौंरा हमरो बताह बना देत।

सुभाष- सहए तँ हमहुँ कहैबला रही। हमर मुहक बात छीनि लेलौं।हमरा किछु नै फुराइ अछि। की करी की नै। ककरासँ देखाबी, ककरासँ नै। यै ललन माए, मन होइ अछि जे एकरा राँची वा दरिभंगा लऽ जाय। की विचार अहाँक?

मीरा- हमर विचार इएह अछि जे राँची दरिभंगा लऽ जायसँ पूर्व एकरा कतउ एम्हर-ओम्हर देखए दियौन। नजरि-गुजरि सेहो भए सकै अछि।

सुभाष- तहन ककरासँ देखए दियनि?

मीरा- यै ललन बाप, सुनै छी सुखलाहा कियोट ऐ सभमे बड़ पहुँचल अछि। हुनकेसँ देखाए दियौनि।

सुभाष- हुनक नाम तँ हमहुँ बड़ सुनै छी।

(ललन घरामसँ खसि पड़ै अछि आ मुँह रगड़ए लगै छथि। दुआरिपर ललन ओंघराए रहल अछि।)

मीरा- (अफसियाँत भऽ) बौआ रौ बौआ। की भए गेलौक रौ बौआ?

ललन- (माथ पटकैत) हम तोरे संग जबौ। हम आब नै जीबौ। हम तोरो लऽ जेबौ अपने संग। हम तोरो खेबौ। हम कोनो भात-दालि खाइ छी। हमरा चाही पियोर खून। हमरा बगिया देने रहौ। बगिएमे सबटा कारामात छल। (सौंसे दुआरि ललन ओंघरए रहल अछि। कपड़ा-लत्ता फारि लै अछि। पवन, मटुक, राजू आ संजयक प्रवेश। ललनक दृश्य देख रहल छथि सभ कियो। सुभाषकँ अक-बक किछु नै फुराइ छन्हि।)

मटुक- यौ सुभाष, बौक जेकाँ ठाढ़ रहने काज नै चलत। अहाँ सुखल कियोट लग जाउ। हुनका जल्दी बजौने आउ।

(सुभाष सुखल कियोटक ओइठाम गेलाह। किछुए खानक बाद सुभाषक संग सुखलक प्रवेश।)

सुखल- अहाँ सभ कने कात भऽ जाउ।

(सभ कियो कात भऽ जाइ छथि। सुखलकँ देख कऽ ललन आओर माथ पटकए लगै अछि।)

सुभाष- कने जल्दी देखियौक सरकार।

सुखल- अहाँ सभ हरबराउ नै। हम बैसल नै छी सभ देख रहल छी। (अपन जेबीसँ किछु निकालि कऽ ललनपर फेकै छथि। ललन बिल्कुल शांत भऽ जाइ अछि।)

ललन- आब नै हौ। आब कहियो नै एबह।

सुखल- तों, के छिअएँ?

ललन- हम नै कहबह-3

सुखल- नै कहबैं, नै कहबैं की?

ललन- नै हौ। तों हमर के छह, जे तोरा हम कहबह।

सुखल- हम तोहर बाप छियौ।

ललन- हमहुँ तोहर बाप छियह।

(सुखल ललनकैं एक चाट गालपर मारि दै छथि।)

आब नै एबह।

सुखल- नाम कह।

ललन- हमर नाम छी देवकी कुमारी।

सुखल- के रखने छौ?

ललन- छोटकी काकी।

सुखल- कत्तऽ रखने छौक?

ललन- से नै कहबह-3

(फेर सुखल एक चाट दऽ कऽ माथा हाथ दै छथि।)

सुखल- आब कहबेँ।

ललन- हँ हौ। आब कहबह।

सुखल- तहन कह। जल्दी बाज। नै तँ बुझि ले।

ललन- मारह नै, कहि दै छियह। कोहामे। पैखाना घरमे।

सुखल- किअए अलैँ?

ललन- ललनकेँ लऽ जेबा लेल। एकसरे हमरा मन नै लगै अछि। हम ललनकेँ नै छोड़बै।

(सुखल ललनकेँ कसि कऽ माथा हाथ दै छथि। भूत भागि जाइ अछि। ललन चंगा भऽ जाइ अछि। देह-हाथ झारि कऽ कुर्सीपर बैस जाइ छथि।)

बाबूजी, एत्ते भीड़ किअए अछि?

सुभाष- नै कोनो खास बात। हिनका सभकेँ हमरासँ किछु विशेष गप्प छेलनि। ललन, तों जाह बौआ।

(ललनक प्रस्थान)

सुखल गोसांइ, हमर बेटा केना ठीक हएत? एकरा अछि की?

सुखल- एकरा केलहा अछि? एकरा केनिहारि अहाँकेँ अपने परिवारमे अछि।

सुभाष- गोसांइ, एकर इलाज अहींकेँ करए पड़त।

सुखल- सुभाषबाबू, एकर इलाज हमरासँ असंभव अछि। हम आब ई काज छोड़ि देलौं। हाथ जोड़ै छी, दोसर जोगार कए लिअ।

(प्रस्थान)

पटाक्षेप

दृश्य दोसर

(स्थान- सुभाष ठाकुरक घर। दलानपर सुभाष आ मीरा चिन्तित मुद्रामे बैसल छथि। पवन, मटुक राजू ओ संजयक प्रवेश।)

मटुक- सुभाषभाय, अहाँक बेटा भरि-भरि राति बौआइते रहै अछि।

पवन- हँ सुभाष कका, हमहूँ देखलिऐ आठ बजे रातिमे गाछी दिस जाइत आ कहलियनि तँ कहलनि तू हमर बाप छें।

राजू- हमहुँ देखलियनि, बारह बजे रातिमे मुसहरी दिस निछोहे भागल जाइत। तखन हम राम एकबाल ओइठामसँ भोज खा कऽ अबैत रही।

संजय- सुभाष मामा, काल्हि साँझमे हमरो ऐठाम गेल रहए। हमरा कहलक- हमहुँ पठबै आ बड़का हाकिम बनबै। शर्ट उनटा पहिरने छल आ एकहि पएरमे जूता छलै।

सुभाष- अपने सभ विचार दिअ जे हम की करी?

(ललनक प्रवेश। पूर्ण बताह अवस्थामे छथि। अबितहि शर्ट निकालि फेक दै अछि। गंजी फारैत-चिरैत अछि। बाप रौ बाप, माए गै माए करैत ओंधरा रहल अछि। माथ पकड़ि बैस कऽ झुलि रहल अछि।)

ललन- आब हम चारिए दिन जीबौक। हम तोरे लइ लए आएल छी। हमरा एतऽ नीक नै लागि रहल अछि। छोटकी काकी देबकी दीदीकेँ खा कऽ सीखलकै। हमहुँ देबकी दीदी लग रहब। ओ हमरा बड़ मानैतए। देबकी दीदी हमरे खून पीबि ओइ पैखाना घरमे कोहामे रहै अछि। पाँच दिनक अन्दरमे हम निपत्ता भऽ जेबौ।

(फेर ओँधरए रहल अछि। कुक्कुर जेकाँ माटि भोमहरि कऽ खए रहल अछि। दलानपर दर्शक अपार भीड़ अछि।)

सुभाष- यौ श्रोत्रा-समाज लोकनि, अपने सभ एकर बकनाइ सुनि रहलौं अछि। हम की करी, हमरा अहाँ सभ विचार दिअ।

मटुक- सुभाषभाय, अहाँ किछु नै करु अहाँ एक्केटा काज करु।

सुभाष- की करु। अहीं बाजू।

मटुक- एकरा उठा-पुठा कऽ छोटकी अंगनामे राखि दियौ आओर ओकरा कहियौ जे तू एकरा होंसैत दहिन। जदी ओ एकरा होंसैत देतै तखने ई ठीक भए जाएत। आन कोनो उपए नै।

ललन- जाधरि छेटकी काकी हमरा नै छुतै ताधरि हम बताहे रहब, चारि दिनमे मरि जाएब।

मटुक- कहलौं ने सुभाषभाय। एकरा जल्दी लऽ चलू। नै तऽ ई नै बाँचत।

पवन- कका, अहाँ डरैत किएक छी? हमरा लोकनि छी ने पीठपर। यौ कका, ओ कथीमे फरिएतै? मारिमे-गारिमे, भालामे-लाठीमे आडमे-समांगमे, घनमे-संपत्तिमे, केशमे फौदारीमे। हम सभ किछुमे सक्षमे छी

अहाँ डरु नै कका। आ नै तऽ अहाँ अपन जानू। बेटा हाथसँ चलि जाएत।

(सुभाष आ मीरा ललनकेँ उठा-पुठा कऽ सुकनी लग लऽ जा रहल अछि। सुकनी यदुलाल ठाकुरक घरवाली आ सोमन ठाकुरक माए छथिन। सुकनी रोटी पकबै अछि आ सोमन कुट्टी काटि रहल अछि। सुभाष आ मीरा ललनक संग प्रवेश। ओ सभ ललनकेँ सुकनीक अंगनामे पटकि दै अछि। ललन पहिनहि जेकाँ कऽ रहल अछि।)

मीरा- भैडाही एकरा होंसत, नइ तँ बापसँ भेँट करेबौ। सैंखौकी-बेटखौकी एकरा एखन ठीक कर नै तऽ भकसी झोंकेबौ।

सुकनी- ओइ हाथमे लकबा धरतौ। सैंडाही मङजरौनी लुल्ही पकड़तौ।

(आंगनमे हो-हल्ला भऽ रहल अछि। हल्ला सुनि यदू लाल आ सोमनक प्रवेश।)

सोमन- माए तों शान्त रह। कका, अहाँ नीक काज नै केलौं। एहिसँ कोन फेदा? कोन इज्जत? कोन प्रतिष्ठा? हमरा सबहक प्रतिष्ठा अहाँ माटिमे मिला देलौं। अबहु चेत जाउ नै तऽ एकर परिणाम बड खराब हएत।

सुभाष- परिणाम जे हेबाक हएत से हएत मुदा गै मौगिया, एखन तों एकरा एक्को बेर छुबि दहिन नै तऽ आइ तों नै आकि हमहीं नै।

सोमन- गै माए तों एक्को बेर नै बाज आ ने एक्को बेर एतएसँ उठ। ऐ कुत्ताकेँ एहिना भुकए दही।

सुभाष- चौट्टा तू हमरा कुत्ता कहबेँ एखने मारैत-मारैत सोझ कऽ देबौ नै कहीन ऐ मौगियाकेँ जे ललनमाकेँ चुप-चाप होंसैत देतौ।

सोमन- चौट्टा, अन्हरा कहींकेँ। सभ खचरै निकलि जाएत।

(राजूक प्रवेश)

राजू- हौ सोमन सुनह। हल्ला-गुल्ला नइ करह, एक बेर माए कऽ कहक जे एकरा होंसैत देतै। एकरो संतोष भऽ जेतै आ हल्लो-गुल्ला शान्त भऽ जेतै। तोरा नीक लगै छह ऐहन अशान्ति।

सोमन- अहाँ पढ़ल-लिखल लोक भऽ ऐहन भासल गप्प कए रहल छी। ई गप्प हमरा बड अप्रिय लागल। अइँ यौ राजूबाबू एइ छौड़ाकेँ माथा खराप भऽ गेलै। तँ सुकनीसँ छुआ दहीन ठीक भऽ जेतै। ककरो बोखार लागल तँ सुकनीसँ छुआ दहीन, ककरो ललबा मारि देलक तँ सुकनीसँ छुआ दहीन। सबसँ बुरबक दीनेनाथ होइ छै की ने? ठीके कहबी छै- मुँह-दुबरा बौह सबहक भौजाइ होइ छै।

राजू- सोमन, हम अपन बात आपस लेलौं। हमरासँ गलती भेल। तौं सभ अपसेमे फरिया लएह। वा जे मन हो से करह। हम जाइ छी।

(राजूक प्रस्थान)

मटुक- सोमन, अहाँ माएकेँ कहियौन ललनमाकेँ छुबै लए नै तँ बुझि लिअ।

सोमन- हमर माए कोनो हालेत मे नै छुबि सकै अछि। अइ लेल अहाँ सभकेँ जे करबाक हुअए से करु।

मटुक- हरामी नहितन, डाइनकेँ प्रश्रय दै अछि। ऐहन माएकँ भरल सभामे जिनदे हम सभ जरा दैतौं।

सोमन- निकाल सार, बजा कोन धाइमकेँ बजाबै छँ। जदी हमर माए डाइन साबित भेल तखन धाइमक टोटल खर्च हमर आओर माएकेँ भरल सभामे मोटिया तेल ढारि कऽ आगि लगा देब।

मटुक- एक महिनाक भीतरे हम तोरा माएकँ डाइन निकालि कऽ देखा दै छियौ। सार, हम तोरा माएकँ एक तोरा माएकँ एक महिना कऽ भीतरे भकसी नइ झोंका देलौं तऽ हम पाजी।

सोमन- सार, तोहूँ सुनि ले, डाइन साबित भेलापर हमहुँ अपन माएकँ जिनदे नै जरा देलौं तँ हम पाजी।

पवन- कका, चलू अपन आंगन। लऽ चलू ललनमाकेँ। ई खच्चरी नइ छुअत एकरा। एकटा चिक्कन धाइमकेँ लाउ आ पहिने एकरा डाइन साबित करु, तखन एकरा सभकेँ बापक बियाह आ पितियाक सगाइ देखाएब। रुपैयाक बड़ गरमी भऽ गेलैए सोमनाकेँ। चलू कक्का। लऽ चलू ललनमाकेँ।

(सबहक प्रस्थान)

पटाक्षेप

तेसर दृश्य

(स्थान-सुभाष ठाकुरक घर। दुनू परानी ललनक विषएमे गप-सप करै छथि।)

मीरा- यै ललनक बाबू, हमर विचार अछि जे आब ललनकेँ कोनो बढ़ियाँ धाइमसँ देखाए दियौ।

सुभाष- यै ललनक माए, रातिमे अपन घरक गोसांइ काली बंदी हमरा सप्पन देलनि जे बौआकेँ कोनो चिक्कन धाइमसँ देखा। हम पुछलियनि जे के चिक्कन धाइम छथि तऽ ओ कहलनि जे खोपामे रोडक कातमे परवतिया कोइर नामक एकटा धाइम छथि, ओ एकदम सिद्ध धाइम छथि। ओ जे किछु कहै छथि से उचितो मे उचित। ओतए तोरा मनक भ्रम दूर भऽ जेतौ।

मीरा- ललन बाउ, घरक गोसांइ बड़ पैघ होइ छथिन। हुनक कहल नै करबनि तँ किनक कहल करबनि।

सुभाष- हँ हँ हुनक कहल करबाके अछि! ललन, ललन, बौआ ललन।

(ललनक प्रवेश। ललन बताहक अवस्थामे छथि।)

ललन- हमरा तों बौआ किअए कहै छह? हम तोहर बौआ नै छियह। हम तोहर नाना छियह। आइसँ तों हमरा नाना कहह।

सुभाष- ललन नाना, हमरा सङे चलू एकठाम मेला देखै लए। मएओ जेतीह।

ललन- हम पएरहि नै जेबह। हम कनहापर जेबह।

सुभाष- चलह ने, बेसी कनहेपर चलिहह आ कने-मने पएरो।

ललन- बेस चलह। हमरा ओतए रसगुल्ला, लाय मुरही, झिल्ली किन दिहह। बगियो कीन दिह।

मीरा- चल ने, सबटा कीन देबौ।

(सुभाष, मीरा आ ललन जा रहलह अछि। परबतिया कोइर ओइठाम। परबतिया गहबरमे बैसल छथि! मृदंग बाजि रहल अछि। किछए कालमे परबतियाक देहपर काली बंदी सवार भऽ जाइत छथिन्ह। मृदंग बजनाइ बन्न भऽ जाइ अछि।)

परबतिया- होऽऽऽ बोल जय गंगा। बोल जय गंगा। काली बंदी छियह हम। बोल जय गंगा। बाजह, के कहाली छह? बोल जय गंगा। जल्दी लग आबह। बोल जय गंगा, जल्दी आबह। हमरा जेबाक छह बाबा धाम। फेर गंगोकेँ देखनाइ अछि।

(तीनू परानी लग जाइ छथि। ललन देह-हाथ पटकि रहल अछि। मूरी हिलाए रहल अछि। भगत पीड़ि परसँ माटि लऽ कऽ ललनक देहपर फेंकलथि। ललन शांत भऽ जाइ अछि। भगत ललनक माथक पूरा पकड़ै छथि।)

परबतिया- हौ बाबू, एकरा केलहा नै छह। जे कियो तोरा कहै छह जे एकरा केलहा अछि से तोहर कट्टर दुश्मन छियह। तोरा दुनू दियादमे झगड़ा लगाबए चाहै छह। बोल जय गंगा। काली बंदी छियह। हौ बाबू ओ तोरासँ ऊपरे ऊपर मुँह धेने रहैत छह। ओ आस्तीनक साँप छियह। हौ बाबू तोड़ै लऽ सब चाहैत अछि मुदा, जोड़ै लऽ कियो नै। बोल जय गंगा। ओ बड़का धुर्त्त छह, मचण्ड छह।

सुभाष- सरकार, हमरा बहुते लोक कहलक जे अहाँक छोटकी भाबो पहुँचल फकीर अछि। ओकरहि ई कारामात छी।

परबतिया- बोल जय गंगा। हौ बाबू, कने तोहुँ सोचहक, अकल लगाबहक जे जदी डाइनकेँ एतेक पावर रहितैक तँ ओ अपन विद्यासँ सौंसे दुनियाँपर शासन करैत रहितै। राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्य मंत्री, एस.डी.ओ., कलक्टर, थाना-पुलिस, बैंक सभटा वएह रहितै ने। बोल जय गंगा। हौ बाबू, डायनपर विश्वास केनाइ खाँटी अंध विश्वास छी। ई मनक भ्रम छी। ई मनक शंका छी। बोल जय गंगा। हौ बाबू, अगर शंकाबला आदमी केकरो हँसैत देख लेलक तँ ओकरो होइ छै जे ओ हमरेपर हँसल। तें हम यएह कहबह जे तों नीक लोक लागै छह, ऐ भ्रममे नै पड़ह। नै जौं पड़लह तँ सत्यानाश भऽ जेतह। हम तोरहि घर गोसांइ काली बंदी बाजै छियह। बोल जय गंगा। हौ बाबू, आब हमरा देरी भऽ रहल छह, हमर विमान ऊपरमे लागल छह।

मीरा- सरकार, ई ठीक केना होएत, से उपए बता दथुन न? ई एना किअए करै अछि?

परबतिया- बोल जय गंगा। हौ बाबू, ऐ छौंड़ाकेँ छीनरदेवी लागलि छह।

सुभाष- छीनरदेवी हटत केना?

परबतिया- हँ हटत, नै किअए हटत? जल्दी तों एकर बियाह केहनो लड़कीसँ करह। सभ ठीक भऽ जेतह। आओरो कोनो कष्ट छह?

सुभाष- नै सरकार, जदी अपने सहाय रहबै तँ कोनो कष्ट नै हेतै।

मीरा- सरकार, कने विभूति दए दिअ।

(परबतिया मीराकेँ विभूति देलनि।)

परबतिया- बोल जय गंगा। बोल जय गंगा। बोल जय गंगा। आब हम जाइ छिअ बाबा धाम।

(कहैत कहैत काली बंदी चलि जाइ छथि।)

सुभाष- सरकार, अपनेक दक्षिणा?

परबतिया- पाँच टाका मात्र।

सुभाष- सरकार एतबे?

परबतिया- हँ पाँचे टाका मात्र। उहो गहबरमे प्रसाद चढ़बै लेल। हमरा गहबरमे ठकै फुसलबै बला काज नै होइत अछि। हमरा गहबरमे कल्याण आ संतोषक गप होइ अछि। शंका वा भ्रम बढ़ाबए बला नै, पूर्णतः हटाबए बला गप होइत अछि। आब अपने सभ जाउ। एकर बियाह जल्दी करु, छीनरदेवी भागि जाएत।

(तीनू परानी माथा टेक कऽ प्रणाम करै छथि आ आर्शीवाद लऽ कऽ प्रस्थान करै छथि।)

पटाक्षेप

चारिम दृश्य

(स्थान- सुभाष ठाकुरक आवास। सुभाषक पीसा घटकराज ठाकुर छथि। दुनू आदमी दलानपर बैस कऽ गप-सप्प करै छथि। ललन चश्मा आ फाटल- चिटल वस्त्र पहिर बताह भेषमे एम्हर-ओम्हर, दर्शकक बीचमे घुमि रहल अछि।)

घटकराज- बौआ, रातिमे किअए फोन केने रही? तखन हम गामपर नै रही, पोखरि दिशि गेल रही।

सुभाष- की कहियऽ पीसा। कहैत लाजो होइ अछि। मुदा कहबह नै तँ बुझबहक केना? हौ, ललनमाकेँ छीनरदेवी लागल अछि तँ ओ बतहपनी करैए। एगो नीक भगत कहलनि जे एकर वियाह जल्दी कर, ठीक भए जेतौ। ऐ विषयमे गप केनाइ अनिवार्य छल। एकरा लेल केत्तौ लड़िकीक जोगार करहक।

घटकराज- बौआ, हमरा लग लड़िका-लड़िकीक जुगार सदिखन रहिते अछि। मुदा एखन तँ नै अछि आ तोरा करबाक छह जल्दीए। खएर एगो उपए छह एकरा कहुना कऽ दवाइ खिया-पिया कऽ शांत कऽ अमोलागाछी लऽ चलह। ओतय एहेने जरूरीबला वियाहक लड़िका-लड़िकी प्रतिदिन आबै अछि आओर काली मंदिरमे वियाह होइ अछि। आइ एगो लड़िकी अवस्स आएल हेतीह। मुदा ओतए लेन-देनक कोनो गप नै होइ अिछ। मंदिरक पुजारी दु-चारि बेर फोन हमरा प्रतिदिन करै छथि।

सुभाष- तहन पीसा, एखने अमोलागाछी चलल जाए?

घटकराज- बिलंब जुनि करह, नै तँ लड़िकी उठि जेतीह। ओना हम पुजारीकेँ फोन कऽ दै छियनि जे हम लिड़का लऽ कऽ जल्दी आिब रहलौं हन।

(घटकराज पुजारीकेँ फोन करै छथि। ऐ बीच सुभाष ललनकेँ दवाइ खिया- पिया कऽ शांत करै छथि। मीराकेँ बजा कऽ ललनकेँ चिक्कन कपड़ा पहिराबै छथि। पूर्ण तैयार भऽ कऽ सुभाष, ललन आ घटकराज अमोलागाछी जाए रहला अछि। किदु देर बाद ओ सभ ओतए पहुँचि गेलाह। पर्दा हटै अछि। काली मंदिरमे पुजारी श्री विनोद झा घंटी डोलए पूजा करै छथि। सुभाष, ललन आ घटकराज माथ टेकि प्रणाम करैत छथि। विनोद झा ''ऊँ श्री काल्यै नम:'' मंत्र जपि रहल छथि। सुभाष तीनु आदमी कालीकेँ प्रणाम कऽ बैसैत छथि। दोसर कात लड़िकी अनुअंजना अपन माए-बापक संग बैसल छथि।लड़िकीक बाप बलदेव महतो आओर माए मालती देवी छथिन।)

बलदेव- पंडीजी, हमरा लोकनि कखनसँ बैसल छी?

विनोद- से हम की करब? लड़िका एलाह एखन। बिना लड़िके वियाह होइतए।

मालती- पंडीजी, लड़िका वएह छथि की?

विनोद- हँ हँ, वएह हेताह छोट अहाँक दमाद।

मालती- अनुअंजना बाउ, लड़िका तँ बड खाप-सूरत अछि। यै, लड़िका अपन बुच्चीसँ लाख कच्छे निमन अछि। समधि सेहो राज कुमारे जकाँ छथि। यै अनु अंजना बाउ, एकटा गप्प कहु।

बलदेव- कहु ने, की कहए चाहै छी?

मालती- हमहुँ आइए समधिसँ वियाह कऽ लिअ।

बलदेव- हँ। हँ। हँ। हँ। औगताउ नै। जुलूम भऽ जाएत। हम केना जीयब। एक्कोटा बकरीयो नै अछि।

विनोद- आउ जजमान सभ। आबै जाइ जाउ आ मैया कालीक दरवारमे बैसै जाउ।

(एक कात लड़िकाबला, दोसर कात लड़िकीबला आ बीचमे पंडीजी बैसैत छथि। पंडीजी लड़िका-लड़िकीक हाथमे गंगा जल दैत छथिन।)

पढ्ढु- ओम अपवित्रो पवित्रो भव- 3

दुनू- (ललन ओ अनु अंजना) ओम अपवित्रो पवित्रो भव- 3

विनोद- अपन-अपन देहकँ सिद्ध कऽ लिय।

(ललन आ अनुअंजना जल देहपर छीटि लै छथि।)

पढ्ढु- ओम श्री गणेशाय नम: -3

दुनू- ओम श्री गणेशय नम: -5

विनोद- ओम श्री काल्यै नम: -5

दुनू- ओम श्री काल्यै नम: -5

ललन- पंडीजी, वियाह कखन हएत, से मंत्र पढ्ढुने।

विनोद- एखन कुम्हरम भए रहल अछि आओर वियाह रातिमे हएत।

बलदेव- पंडीजी, एना किअए यौ?

अनुअंजना- ठीके कहै छथि लड़िका। एत्ते देरी कतउ वियाहमे हुअए। हम वियाह नै देखने छी की? एहेन-एहेन कतेको वियाह देखने छी आ कऽ कए छोड़ि देने छी।

(दुनू पक्ष एक-दोसरकेँ मुँह देखै छथि।)

विनोद- अहाँ सभ औगतउ नै। एिह दरबारमे सभ कलेश नष्ट भए जाइ अिछ। अहाँ कालीपर पूर्ण भरोसा राखू। पढ़ु अहाँ दुनू गोटे- ओम गौरीशंकरभ्याम् नम: -5

दुनू- ओम गौरी शंकराभ्याम नम: -5

(दुनूकेँ सिन्दुरदान करए कहै छथि पंडीजी।लड़िका-लड़िकीक मांगमे भुसना सेनुर दैत छथि। पंडीजी दुनूकेँ गठबंधन कराए काली देवीकेँ गोर लगबै छथि। फेर सभ कियो गोर लागै छथि। हल्लुक नश्ता-पानि होइ अछि।)

ललन- पंडीजी, आब हमरा लोकनि जा सकैत छी घर?

विनोद- हाँ हाँ हाँ हाँ, रूकु। सुभाषबाबू आ बलदेबबाबू, पहिने दक्षिणा दिअ तहन जाएब।

सुभाष- कतेक पंडीजी?

विनोद- मात्र एक सए एक टाका।

बलदेव- हमरा कतेक लगतै पंडीजी?

विनोद- अहाँकेँ मात्र एकावन टाका।

(दुनू आदमी पंडीजीकेँ दक्षिणा देलनि आ आशीर्वाद लऽ कऽ अपन-अपन घर हेतु प्रस्थान। लड़िका-लड़िकी दुनू एक-दोसरक कन्हापर हाथ राखि कऽ शानसँ जा रहल छथि पाछू-पाछू।)

पटाक्षेप

अंतिम दृश्य

(स्थान सुभाष ठाकुरक घर। सुभाष दुनू परानी आपसी गप-सप्प करै छथि।)

सुभाष- ललन माए, ऐ बीचमे ललनक चालि-चलन अहाँकेँ केहेन लगैए?

मीरा- (मुस्कुराइत) हमरा बड़ नीक लगैए। पहिनेसँ साफे बदलल लगैए। अहाँकेँ केहेन बुसाइए?

सुभाष- हमरो बिल्कुल शांत बुझाइए।

(परबतियाक प्रवेश। दुनू परानी कुर्सीपर सँ उठि पएर छुबि प्रणाम करै छथि। फेर तीनू जन कुर्सीपर बैसै छथि।)

परबतिया- कहु हाल-चाल सुभाष भाय।

सुभाष- सरकार अपनेक किरपासँ सभ आनन्द छी। धन्य छी सरकार अपने।

मीरा- सरकार, आब चैनक साँस लै छी। अपने हमरा लोकनिकेँ परम शांति प्रदान केलौं। धन्यवाद अपनेकेँ। सरकार, हमरा लोकनिकेँ

किछु अमृत वचन देल जाउ।

परबतिया- अमृत वचन तँ मैया भगवती दै छथिन। तैयो अपन दू शब्द कहि दै छी। अपने नीक तँ सभ नीक। अंध विश्वास आत्म शांतिकेँ भंङ करैत अछि। ऐसँ सदिखन बची। यएह मुँह पान खियाबै अछि आ यएह मुँह जूता। सत्य आ प्रिय वचन सभकेँ अप्पन बनाबै अछि।

सुभाष- बौआ, बौआ, बौआ ललन।

ललन- (अन्दरेसँ) हँ पिताजी, आबै छी।

सुभाष- बौआ, कनियोकेँ लेने अबिहक, सरकार एलखिनहेँ।

(ललन आ अनुअंजनाक प्रवेश। दुनू परानी परबतियाकेँ पएर छुबि प्रणाम कऽ ठाढ़ छथि।)

परबतिया- बौआ, नीकेना रहै छी ने?

ललन- जी सरकार, अपनेक कृपासँ आब पूर्ण ठीक छी।

परबतिया- आब ठीक रहबे करब। खाली अपन करतब करू आ नीक सत्संगमे रहू। आब हम जाइ छी।

(सभ कियो पएर छुबि प्रणाम केलनि। परबतियाक प्रस्थान।)

सुभाष- अंध विश्वासमे लोक भटकि जिनगीकेँ गर्तमे धकेल लैत अछि। हमहूँ बहकि ओइमे चलि गेलौं। मुदा आब सतत सचेष्ट रहक चाही।

पटाक्षेप

इति शुभम